जन्नत

और

नजात का रास्ता

दान्याल वल्हेली / मेट यू

चश्मा मीडिया

जन्नत

और

नजात का रास्ता

दान्याल वहेली / मेट यू

jannat aur najāt kā rāsta

The Way of Salvation

by Daniel Waheli & Matt Yoo
transl. by Matt Yoo

(Urdu—Hindi script)

© 2021 Daniel Waheli & Matt Yoo

published and printed by
Good Word Communication Services Pvt. Ltd.
New Delhi, INDIA

This booklet may be translated or reprinted freely on the condition that any translation remains faithful to the original material and the contents remain unchanged. Any reproduction or translation must contain this copyright statement.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्ते-मज़ामीन

क्या मैं यक़ीन से जन्नत में दाख़िल हूँगा? 8

1 आदम, हव्वा और रास्तबाज़ी के लिबास 9

2 हज़रत नूह का ईमान 16

3 क़ुरबानी और ईमान : हज़रत इब्राहीम 22

4 हज़रत मूसा और ख़ून 28

5 ईसा अल-मसीह 35

6 ईसा अल-मसीह का इख़्तियार 40

7 तख़लीक़ से लेकर नजात तक 47

ईसा अल-मसीह में नई ज़िंदगी कैसे गुज़ारनी है? 55

8 ईमान का इक़रार 56

9 मुहब्बत के फ़रायज़ 58

10 ईसा अल-मसीह की ज़ात 81

11 ममनू चीज़ें 91

12 अगर अहकाम पर पूरे न उतरे तो फिर? 108

13 ईसा अल-मसीह में क़ायम रहना 112

14 सताते वक़्त साबितक़दम रहना 114

15 अपनी ज़िंदगी से ईमान की गवाही 117

16 ख़ानदानी ज़िंदगी 119

17 नजात और जन्नत का यक़ीन 121

18 सबको ख़ुशख़बरी सुनाना 123

19 यौमे-आख़िरत, जन्नत और जहन्नुम 125

20 कलाम का मुतालआ करने का मुफ़ीद तरीका 128

21 सेहतमंद जमात के निशान 132

बिसमिल्ला हिर रहमानिर रहीम

हर बशरे-ज़मीन की ज़िंदगी अल्लाह तआला के हाथ में है। एक तो पैदा होते ही अल्लाह को प्यारा हो जाता है जबकि दूसरा सौ साल के बाद भी ख़ुशबाश ज़िंदगी गुज़ारता है। तो भी अहम सवाल यह नहीं कि हम कितने अरसे तक ज़िंदा रहेंगे बल्कि यह कि बाद में हमारी मनज़िले-मक़सूद क्या होगी। सवाल यह है कि हम किस तरह यक़ीन से कह सकते हैं कि मौत के बाद हमारा हाल क्या होगा? सवाल का जवाब मुख़्तलिफ़ लोग मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से देते हैं। कुछ तो पूरे एतमाद के साथ फ़रमाते हैं कि हम अपने उस्तादों और राहनुमाओं के वसीले से ही छूट जाएँगे। कुछ समझते हैं कि आख़िरत के दिन हमारे नेक काम हमें बचाए रखेंगे। ऐसे बहुत-से हज़रात भी होते हैं जो मज़हबी रस्मो-रिवाज पूरे करने और क़ुरबानियाँ गुज़रानने से अबदी नजात हासिल करने की उम्मीद रखते हैं। लेकिन क्या इन लोगों को पूरा यक़ीन हासिल है कि यौमे-आख़िरत अल्लाह उन्हें जन्नत में दाख़िल होने की इजाज़त

फ़रमाएगा? क्या उन्हें पूरा एतमाद है कि वह उन्हें रद करके जहन्नुम में नहीं डालेगा?

अगर हम यक़ीन से जानना चाहें कि मरने के बाद कहाँ पहुँचेंगे तो अल्लाह के कलाम का मुतालआ करने की ज़रूरत है। क्योंकि उसी ने अपने कलामे-पाक में वह राहे-हक़ ज़ाहिर की है जिस पर चलकर हम नजात पाने का पूरा यक़ीन और इतमीनान हासिल कर सकते हैं। और यह ऐसी ठोस और मुबारक राह है कि जो उस पर चल पड़े उसके अंदर दूसरों को यह राह दिखाने की गहरी ख़ाहिश उभर आएगी।

अल्लाह ने अपनी यह राह किनसे ज़ाहिर की है? अपने अंबिया और रसूलों के ज़रीए वह हमसे हमकलाम हुआ है। उन्हीं के ज़रीए हम जान लेते हैं कि रहमत और मुहब्बत की यह राह किस तरह हमें नजात तक पहुँचाती है। कलाम में दर्ज उनके फ़रमान मानकर अल्लाह की सलतनत तसलीम करेंगे तो हक़ीक़त तक पहुँचेंगे। और यह हक़ीक़त हमें आज़ाद कर देगी, उसके ज़रीए हम पर अबदी ज़िंदगी और जन्नत का रास्ता ज़ाहिर हो जाएगा।

कभी कभी यह मुबारक मनज़िले-मक़सूद नजात या जन्नत कहलाती है, कभी फ़िरदौस या अबदी ज़िंदगी। इन लफ़्ज़ों के मानी एक ही हैं। अल्लाह की चाहत है कि हर एक नजात पाए। उसकी गहरी ख़ाहिश यही है कि सब जन्नत में दाख़िल हो जाएँ, कि सबको अबदी ज़िंदगी हासिल हो। इंजीले-मुक़द्दस,1 तीमुथियुस 2:3-4,

> यह अच्छा और हमारे नजातदहिंदा अल्लाह को पसंददीदा है। हाँ, वह चाहता है कि तमाम इनसान नजात पाकर सच्चाई को जान लें।

जन्नत कैसी है? इंजीले-मुक़द्दस, मुकाशफ़ा 21:3-5,

> मैंने एक आवाज़ सुनी जिसने तख़्त पर से कहा, "अब अल्लाह की सुकूनतगाह इनसानों के दरमियान है। वह उनके साथ सुकूनत करेगा और वह उसकी क़ौम होंगे। अल्लाह ख़ुद उनका ख़ुदा होगा। वह उनकी आँखों से तमाम आँसू पोंछ डालेगा। अब से न मौत होगी न मातम, न रोना होगा न दर्द, क्योंकि जो भी पहले था वह जाता रहा है।" जो तख़्त पर बैठा था उसने कहा, "मैं सब कुछ नए सिरे से बना रहा हूँ।" उसने यह भी कहा, "यह लिख दे, क्योंकि यह अलफ़ाज़ क़ाबिले-एतमाद और सच्चे हैं।"

इंजीले-मुक़द्दस, मुकाशफ़ा 21:22-23,

> मैंने शहर में अल्लाह का घर न देखा, क्योंकि रब क़ादिरे-मुतलक़ ख़ुदा और लेला [बर्रा] ही उसका मक़दिस हैं। शहर को सूरज या चाँद की ज़रूरत नहीं जो उसे रौशन करे, क्योंकि अल्लाह का जलाल उसे रौशन कर देता है और लेला उसका चराग़ है।

इंजीले-मुक़द्दस, मुकाशफ़ा 22:14,

> मुबारक हैं वह जो अपने लिबास को धोते हैं। क्योंकि वह ज़िंदगी के दरख़्त के फल से खाने और दरवाज़ों के ज़रीए शहर में दाख़िल होने का हक़ रखते हैं।

इंजीले-मुक़द्दस, मुकाशफ़ा 21:27,

> कोई नापाक चीज़ उसमें दाख़िल नहीं होगी, न वह जो घिनौनी हरकतें करता और झूठ बोलता है। सिर्फ़ वह दाख़िल होंगे जिनके नाम लेले की किताबे-हयात में दर्ज हैं।

अल्लाह की ख़ाहिश है कि आप और हर बशरे-ज़मीन उसके हुज़ूर आकर जन्नत में अबदी ज़िंदगी पाएँ। वहाँ हम अल्लाह को रू बरू देखेंगे, हम उसके तख़्त के सामने अबद तक उसकी इबादत करेंगे। क्या आप यह रास्ता जानते हैं? क्या आप इसे जानना चाहते हैं?

लातादाद लोग इस अहम सवाल का जवाब नहीं जानते। वह मज़हबी रस्मो-रिवाज तो ज़रूर अदा करते हैं, लेकिन उन्हें पक्का इल्म नहीं कि जन्नत में जाने की इजाज़त मिलेगी या नहीं। ज़्यादातर लोग फ़रमाते हैं कि “मैं तो ज़रूर पहुँचूँगा, इंशाल्लाह।” लेकिन उन्हें कोई यक़ीन नहीं कि अल्लाह वाक़ई पहुँचने देगा कि नहीं। अगर आपकी यही हालत है

तो ज़रूर आगे पढ़िए, क्योंकि इस अहम सवाल का जवाब आनेवाले सफ़हों में दर्ज है।

आइए मुझे आपके लिए दुआ करने दीजिए कि अल्लाह आपको बरकत बख़्शकर आपका दिल उसकी सच्चाई के लिए खोले, कि आप वह हक़ीक़त पाएँ जिससे जन्नत हासिल हो जाए।

ऐ अल्लाह तआला, हमारे मालिक और ख़ालिक़, बराए-मेहरबानी इस किताब के पढ़नेवाले को बरकत बख़्श दे ताकि वह जन्नत का वाहिद रास्ता पाएँ। मैं अपने भाई या बहन के लिए दुआ करता हूँ जो इस वक़्त यह किताब पढ़ रहे हैं। उनकी आँखें खोल दे ताकि उन्हें तेरी नजात की बरकत की समझ आए और वह तेरी जन्नत में तेरे हुज़ूर अबदी ज़िंदगी पाएँ। ईसा अल-मसीह के नाम से माँगता हूँ। आमीन और आमीन।

अब हम तौरेत, ज़बूर और इंजीले-मुक़द्दस में से चंद-एक बयानात पढ़ेंगे। हम बाज़ अंबिया की ज़िंदगियों के बारे में और आख़िर में ईसा अल-मसीह के बारे में पढ़ेंगे। इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 5:39 में ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) फ़रमाते हैं,

> तुम अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो क्योंकि समझते हो कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी हासिल है। लेकिन यही मेरे बारे में गवाही देते हैं!

और इंजीले-मुक़द्दस, 2 तीमुथियुस 3:16-17 में लिखा है,

> क्योंकि हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है और तालीम देने, मलामत करने, इसलाह करने और रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने की तरबियत देने के लिए मुफ़ीद है। कलामे-मुक़द्दस का मक़सद यही है कि अल्लाह का बंदा हर लिहाज़ से क़ाबिल और हर नेक काम के लिए तैयार हो।

इन आयात से मालूम होता है कि तौरेत, ज़बूर और इंजीले-मुक़द्दस अल्लाह के रूह से वुजूद में आए। इसका मतलब है कि कलामे-पाक में अल्लाह की फूँक है। लिहाज़ा वह हर तरह से क़ाबिले-एतबार है। कोई भी उसे तबदील नहीं कर सकता। उसमें अल्लाह ख़ुद हमसे हमकलाम होता है और हम पर नजात का इज़हार करता है।

ख़ुलासा

- अल्लाह आपको नजात का रास्ता दिखाना चाहता है।
- अल्लाह आपके ज़हन से हर शक दूर करना चाहता है ताकि आपको यक़ीन आए कि एक दिन आप ज़रूर उसके हुज़ूर जन्नत में जाएँगे। नजात की यह राह तौरेत, ज़बूर और इंजीले-मुक़द्दस में दर्ज है। इन पर ग़ौर करने से आप अबदी ज़िंदगी का रास्ता पाएँगे।

पहले 6 अबवाब में हम नजात पाने की राह सीख लेंगे। इनके बाद के अबवाब अल्लाह को पसंददीदा चाल-चलन बयान करेंगे।

क्या मैं यक़ीन से जन्नत में दाख़िल हूँगा?

1

आदम, हव्वा और रास्तबाज़ी के लिबास

तौरेत के सहीफ़े बनाम पैदाइश में बयान किया गया है कि अल्लाह ने हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को कैसे ख़लक़ किया। वहाँ हम यह भी सीखते हैं कि उन्होंने अल्लाह की ना-फ़रमानी की, जिसके नतीजे में वह अल्लाह से दूर हुए। फिर लिखा है कि अल्लाह ने ख़ुद दुनिया में पहली बार जानवर ज़बह किए और उनकी खालों से लिबास बनाकर उन्हें आदम और हव्वा को पहनाया। तौरेत, पैदाइश 3:1-13,21-24,

> साँप ज़मीन पर चलने-फिरनेवाले उन तमाम जानवरों से ज़्यादा चालाक था जिनको रब ख़ुदा ने बनाया था।

उसने औरत से पूछा, “क्या अल्लाह ने वाक़ई कहा कि बाग़ के किसी भी दरख़्त का फल न खाना?” औरत ने जवाब दिया, “हरगिज़ नहीं। हम बाग़ का हर फल खा सकते हैं, सिर्फ़ उस दरख़्त के फल से गुरेज़ करना है जो बाग़ के बीच में है। अल्लाह ने कहा कि उसका फल न खाओ बल्कि उसे छूना भी नहीं, वरना तुम यक़ीनन मर जाओगे।” साँप ने औरत से कहा, “तुम हरगिज़ न मरोगे, बल्कि अल्लाह जानता है कि जब तुम उसका फल खाओगे तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी और तुम अल्लाह की मानिंद हो जाओगे, तुम जो भी अच्छा और बुरा है उसे जान लोगे।”

औरत ने दरख़्त पर ग़ौर किया कि खाने के लिए अच्छा और देखने में भी दिलकश है। सबसे दिलफ़रेब बात यह कि उससे समझ हासिल हो सकती है! यह सोचकर उसने उसका फल लेकर उसे खाया। फिर उसने अपने शौहर को भी दे दिया, क्योंकि वह उसके साथ था। उसने भी खा लिया। लेकिन खाते ही उनकी आँखें खुल गईं और उनको मालूम हुआ कि हम नंगे हैं। चुनाँचे उन्होंने अंजीर के पत्ते सी कर लुंगियाँ बना लीं।

शाम के वक़्त जब ठंडी हवा चलने लगी तो उन्होंने रब ख़ुदा को बाग़ में चलते-फिरते सुना। वह डर के मारे

दरख़्तों के पीछे छिप गए। रब ख़ुदा ने पुकारकर कहा, "आदम तू कहाँ है?" आदम ने जवाब दिया, "मैंने तुझे बाग़ में चलते हुए सुना तो डर गया, क्योंकि मैं नंगा हूँ। इसलिए मैं छिप गया।" उसने पूछा, "किसने तुझे बताया कि तू नंगा है? क्या तूने उस दरख़्त का फल खाया है जिसे खाने से मैंने मना किया था?" आदम ने कहा, "जो औरत तूने मेरे साथ रहने के लिए दी है उसने मुझे फल दिया। इसलिए मैंने खा लिया।" अब रब ख़ुदा औरत से मुख़ातिब हुआ, "तूने यह क्यों किया?" औरत ने जवाब दिया, "साँप ने मुझे बहकाया तो मैंने खाया।"

रब ख़ुदा ने आदम और उसकी बीवी के लिए खालों से लिबास बनाकर उन्हें पहनाया। उसने कहा, "इनसान हमारी मानिंद हो गया है, वह अच्छे और बुरे का इल्म रखता है। अब ऐसा न हो कि वह हाथ बढ़ाकर ज़िंदगी बख़्शनेवाले दरख़्त के फल से ले और उससे खाकर हमेशा तक ज़िंदा रहे।" इसलिए रब ख़ुदा ने उसे बाग़े-अदन से निकालकर उस ज़मीन की खेतीबाड़ी करने की ज़िम्मेदारी दी जिसमें से उसे लिया गया था। इनसान को ख़ारिज करने के बाद उसने बाग़े-अदन के मशरिक़ में करूबी फ़रिश्ते खड़े किए और साथ साथ एक आतिशी

> तलवार रखी जो इधर-उधर घूमती थी ताकि उस रास्ते की हिफ़ाज़त करे जो ज़िंदगी बख़्शनेवाले दरख़्त तक पहुँचाता था।

वाज़िह रहे कि हज़रत आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) ने अल्लाह की ना-फ़रमानी की। यह करने से उन्हें महसूस हुआ कि हम नंगे हैं। उन्हें शर्म आई, और उन्होंने दरख़्त के पत्तों से इस नंगेपन को ढाँपने की कोशिश की। यानी उन्होंने अपनी ना-फ़रमानी और शर्म का हल निकालने की कोशिश की, लेकिन अल्लाह को उनका यह हल नामंज़ूर था। जिस दिन उन्होंने ना-फ़रमानी की अल्लाह तआला शाम के वक़्त बाग़ में आया। वह उनसे बात करना चाहता था, लिहाज़ा उसने फ़रमाया, "आदम तू कहाँ है?"

मगर आदम छिप गया था, और उसने दूर से जवाब दिया, "ऐ अल्लाह, मैं यहाँ हूँ।"

अल्लाह ने पूछा, "तू क्यों छुपा हुआ है?"

आदम ने जवाब दिया, "इसलिए कि मेरे पास कपड़े नहीं।"

अल्लाह ने फ़रमाया, "तुमको कपड़ों का क्या इल्म है? क्या तुमने उस दरख़्त से खाया जो मैंने मना किया था?"

आदम इनकार न कर सका, लेकिन उसने फ़ौरन हव्वा की तरफ़ इशारा करके कहा कि इसी ने मुझे खाने दिया। हव्वा को भी अपनी

ग़लती माननी पड़ी, लेकिन उसने सीधे साँप, जो इबलीस था, की तरफ़ इशारा करके कहा कि इसी ने मुझे धोका दिया।

अल्लाह ने बड़े वाज़िह तौर पर फ़रमाया था कि अगर उस दरख़्त से खाया तो मर जाओगे। ताहम उसने उनकी ना-फ़रमानी के जवाब में उन्हें सीधे सफ़हाए-हस्ती से न मिटाया बल्कि उन पर रहम खाकर उनकी जगह पहले जानवर ज़बह किए। यह जानवर आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) की जगह पहली क़ुरबानी बन गए। रब ने जानवरों की खालों से उनके लिए लिबास बनाए ताकि उनकी शर्म और ना-फ़रमानी को ढाँपा जाए, उनका कफ़्फ़ारा दिया जाए। यों अल्लाह ने इस पहली क़ुरबानी के ज़रीए आदम और हव्वा की ज़िंदगी बचाई। फिर भी लाज़िम था कि वह उन्हें अपनी हुज़ूरी से निकाले, क्योंकि पाक ख़ुदा के सामने गुनाहगार क़ायम नहीं रह सकता।

उस वक़्त से लेकर आज तक एक वसी ख़ला अल्लाह और इनसान के दरमियान हाइल है। कोई भी अल्लाह के हुज़ूर पैदा नहीं होता। हम सबके सब अल्लाह से दूर पैदा हुए हैं, हम सबके सब जन्नत और अबदी ज़िंदगी तक पहुँचानेवाली राह को ढूँडते फिरते हैं।

ऐ अल्लाह, तेरा शुक्र हो कि तूने इब्तिदाई क़ुरबानी मुहैया करके आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को बचाया। दुआ है कि तू हमें सिराते-मुस्तक़ीम दिखाए ताकि हम तुझ तक पहुँच पाएँ। हमें तेरी नजात की ज़रूरत है। तेरे रहम ने आदम और हव्वा को इब्तिदाई क़ुरबानी के ज़रीए

फ़ौरी मौत से बचाया। हमें फिर से तेरी मेहरबानी की ज़रूरत है ताकि हम अपनी शर्मनाक और गुनाहआलूदा हालत से आज़ाद हो जाएँ। हमें वह कामिल क़ुरबानी बख़्श दे जो हमें हमारे गुनाहों से पाक-साफ़ करने के क़ाबिल हो। आमीन।

कुछ लोग रोज़ाना बार बार दुआ माँगते हैं कि ऐ अल्लाह तआला, हमें सिराते-मुस्तक़ीम दिखा। लेकिन यह सीधा रास्ता क्या है? यह कौन-सा सीधा रास्ता है? इन सवालों के जवाब अगले सफ़हों में दर्ज हैं। आगे पढ़िए। इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 14:6 में ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया,

> राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ।

यहाँ नज़र आता है कि ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) राह, हक़ और ज़िंदगी हैं। उनकी पैरवी करने से हम ख़ुद बख़ुद सिराते-मुस्तक़ीम पर चलते हैं। हक़ीक़त में उनकी ज़ात ही यह सीधी राह है। अल्लाह ने क्यों मुक़र्रर किया कि ईसा अल-मसीह हमारे लिए सीधी राह बनें? दीगर अंबिया का मुतालआ करने से हमें इसकी समझ आएगी।

ख़ुलासा

- इब्तिदाई क़ुरबानी गुज़राने के बाद अल्लाह ने आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को लिबास पहनाए।
- पहली क़ुरबानी के ज़रीए अल्लाह ने आदम और हव्वा की ना-फ़रमानी और शर्म को ढाँपकर उनका कफ़्फ़ारा दिया।
- आदम और हव्वा की ना-फ़रमानी के नतीजे में हम सब अल्लाह से दूर हैं, हम सबको उसके पास वापस आने के वसीले की ज़रूरत है।
- कुछ लोग रोज़ाना अल्लाह से इल्तिजा करते हैं कि ऐ अल्लाह, मुझे सीधा रास्ता दिखा।
- ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) बज़ाते-ख़ुद सिराते-मुस्तक़ीम हैं। राह, हक़ और ज़िंदगी वह हैं। ईसा अल-मसीह ही अल्लाह के पास पहुँचानेवाली सीधी राह हैं।

आइए, अब हम आगे बढ़कर हज़रत नूह (ए.एस.) की ज़िंदगी पर ग़ौर करें।

2

हज़रत नूह का ईमान

आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) के बेटे क़ाबील और हाबील पैदा हुए। उनकी ज़िंदगी पर भी इबलीस का साया पड़ गया। उसने क़ाबील को अपने भाई को क़त्ल करने पर उकसाया, और यों बदी बढ़ती गई। जब लोग अल्लाह की राहों से दूर ही चलने लगे तो रब ने फ़ैसला किया कि उन्हें सैलाब के ज़रीए ख़त्म करे। मगर एक ख़ानदान अल्लाह से वफ़ादार रहा, यानी नूह (ए.एस.) और उसका ख़ानदान। अल्लाह ने फ़रमाया कि नूह और उसके ख़ानदान को मैं बड़ी कश्ती के वसीले से बचाऊँगा। तौरेत, पैदाइश 6:5-9,13-14,17-18,

रब ने देखा कि इनसान निहायत बिगड़ गया है, कि उसके तमाम ख़यालात लगातार बुराई की तरफ़ मायल रहते हैं। वह पछताया कि मैंने इनसान को बनाकर दुनिया में रख दिया है, और उसे सख़्त दुख हुआ। उसने कहा, "गो मैं ही ने इनसान को ख़लक़ किया मैं उसे रूए-ज़मीन पर से मिटा डालूँगा। मैं न सिर्फ़ लोगों को बल्कि ज़मीन पर चलने-फिरने और रेंगनेवाले जानवरों और हवा के परिंदों को भी हलाक कर दूँगा, क्योंकि मैं पछताता हूँ कि मैंने उनको बनाया।"

सिर्फ़ नूह पर रब की नज़रे-करम थी। यह उसकी ज़िंदगी का बयान है। नूह रास्तबाज़ था। उस ज़माने के लोगों में सिर्फ़ वही बेक़ुसूर था। वह अल्लाह के साथ चलता था।

तब अल्लाह ने नूह से कहा, "मैंने तमाम जानदारों को ख़त्म करने का फ़ैसला किया है, क्योंकि उनके सबब से पूरी दुनिया ज़ुल्मो-तशद्दुद से भर गई है। चुनाँचे मैं उनको ज़मीन समेत तबाह कर दूँगा। अब अपने लिए सरो की लकड़ी की कश्ती बना ले। उसमें कमरे हों और उसे अंदर और बाहर तारकोल लगा ... मैं पानी का इतना बड़ा सैलाब लाऊँगा कि वह ज़मीन के तमाम जानदारों को हलाक कर डालेगा। ज़मीन पर सब कुछ

> फ़ना हो जाएगा। लेकिन तेरे साथ मैं अहद बाँधूँगा जिसके तहत तू अपने बेटों, अपनी बीवी और बहुओं के साथ कश्ती में जाएगा।

सैलाब के बाद अल्लाह नूह (ए.एस.) से हमकलाम हुआ। तौरेत, पैदाइश 9:8-17,

> तब अल्लाह ने नूह और उसके बेटों से कहा, "अब मैं तुम्हारे और तुम्हारी औलाद के साथ अहद क़ायम करता हूँ। यह अहद उन तमाम जानवरों के साथ भी होगा जो कश्ती में से निकले हैं यानी परिंदों, मवेशियों और ज़मीन पर के तमाम जानवरों के साथ। मैं तुम्हारे साथ अहद बाँधकर वादा करता हूँ कि अब से ऐसा कभी नहीं होगा कि ज़मीन की तमाम ज़िंदगी सैलाब से ख़त्म कर दी जाएगी। अब से ऐसा सैलाब कभी नहीं आएगा जो पूरी ज़मीन को तबाह कर दे।
>
> इस अबदी अहद का निशान जो मैं तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ क़ायम कर रहा हूँ यह है कि मैं अपनी कमान बादलों में रखता हूँ। वह मेरे दुनिया के साथ अहद का निशान होगा। जब कभी मेरे कहने पर आसमान पर बादल छा जाएँगे और क़ौसे-क़ुज़ह उनमें से नज़र आएगी तो मैं यह अहद याद करूँगा जो तुम्हारे और तमाम जानदारों के साथ किया गया है। अब

> कभी भी ऐसा सैलाब नहीं आएगा जो तमाम ज़िंदगी को हलाक कर दे। क़ौसे-क़ुज़ह नज़र आएगी तो मैं उसे देखकर उस दायमी अहद को याद करूँगा जो मेरे और दुनिया की तमाम जानदार मख़लूक़ात के दरमियान है। यह उस अहद का निशान है जो मैंने दुनिया के तमाम जानदारों के साथ किया है।"

कश्ती के ज़रीए अल्लाह ने नूह (ए.एस.) और उसके ख़ानदान को बचाया। कश्ती निहायत बड़ा बहरी जहाज़ था जो अल्लाह ने नूह को बनाने का हुक्म दिया था। उसमें जाने से पहले नूह ने लोगों को तौबा करके बदी से दूर होने को कहा, मगर उन्होंने उसकी न मानी। उनकी यह बिगड़ी हालत देखकर अल्लाह ने सैलाब से उन्हें तमाम जानवरों समेत सफ़हाए-हस्ती से मिटा दिया। बचनेवाले सिर्फ़ नूह और उसका ख़ानदान थे, क्योंकि वह अल्लाह पर ईमान लाए थे। बाक़ी तमाम लोग और जानवर मर गए। सिर्फ़ वह जानवर जो कश्ती में आए थे नूह के ख़ानदान के साथ बच गए।

यह कश्ती अल्लाह का वसीला था जिससे नूह (ए.एस.) और उसके ख़ानदान ने हलाक होने से नजात पाई। तौरेत में दर्ज है कि नूह इसलिए बच गया कि वह अल्लाह के हुज़ूर चलता रहा। उसका अल्लाह पर ईमान पक्का था, और अल्लाह ने उसे बचाया। नूह का ईमान न सिर्फ़ एक नज़रिया था बल्कि उसने अपने ईमान पर अमल भी किया। आमाल के बग़ैर हमारा ईमान बेफ़ायदा है। जब अल्लाह ने नूह को बताया कि

कश्ती तामीर कर तो नूह मान गया और कश्ती बनाने लगा, गो सैलाब का नामो-निशान तक न था। सैलाब के बाद अल्लाह ने वादा किया कि आइंदा मैं पानी से पूरी दुनिया को नेस्तो-नाबूद नहीं करूँगा। उसने उस अहद का निशान भी पेश किया जो आज भी नज़र आता है, यानी क़ौसे-क़ुज़ह। जब भी हम आसमान पर कमान देखते हैं तो हम याद करते हैं कि अल्लाह ने नूह को कश्ती के ज़रीए बचाया, क्योंकि उसने अल्लाह पर ईमान रखा था।

ख़ुलासा

- अल्लाह ने कश्ती यानी बहरी जहाज़ के ज़रीए नूह (ए.एस.) को बचाया।
- नूह (ए.एस.) का अल्लाह पर पक्का ईमान था, और उसने इस ईमान को अमली जामा पहनाकर कश्ती बनाया हालाँकि बाक़ी लोग उसका मज़ाक़ उड़ाकर इसका यक़ीन नहीं करते थे।
- क़ौसे-क़ुज़ह का निशान हमें याद दिलाता है कि नूह को क्या पेश आया। जब हम कमान को देखते हैं तो हम यह भी याद करते हैं कि आइंदा अल्लाह पानी से दुनिया को ख़त्म नहीं करेगा।
- पहले बाब में हमने सीखा था कि अल्लाह ने क़ुरबानी के ज़रीए आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) की शर्म और ना-फ़रमानी को ढाँप दिया। अब नूह (ए.एस.) से हम सीखते हैं कि अल्लाह ने कश्ती के ज़रीए उसे और उसके ख़ानदान को बचाया। वजह यह थी कि वह अल्लाह पर

ईमान लाया और इस ईमान की बिना पर उसने कश्ती बनाई। इससे नजात की दो शरायत नज़र आती हैं :

- क़ुरबानी।
- अल्लाह पर ऐसा ज़िंदा ईमान जो हमारी ज़िंदगी में नज़र आता है।

अगले बाब में इब्राहीम (ए.एस.) के ईमान का ज़िक्र होगा। उसमें हमें दोनों शरायत नज़र आएँगी।

3

क़ुरबानी और ईमान : हज़रत इब्राहीम

अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम (ए.एस) से पक्का वादा करके फ़रमाया कि मैं तेरे वसीले से दुनिया के तमाम ख़ानदानों और अक़वाम को बरकत दूँगा। काफ़ी देर के बाद उसने सारा की नौकरानी हाजिरा के वसीले से इब्राहीम को एक बेटा बख़्श दिया। मज़ीद चंद सालों के बाद उसने सारा के ज़रीए उसे एक और बेटा अता किया। अब ध्यान दीजिए कि अल्लाह ने इब्राहीम के ईमान को किस तरह परखकर वह क़ुरबानी मुहैया की जो आख़िरकार इब्राहीम के बेटे की जगह क़ुरबान हुई। तौरेत, पैदाइश 22:1-18,

कुछ अरसे के बाद अल्लाह ने इब्राहीम को आज़माया। उसने उससे कहा, "इब्राहीम!" उसने जवाब दिया, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" अल्लाह ने कहा, "अपने इकलौते बेटे इसहाक़ को जिसे तू प्यार करता है साथ लेकर मोरियाह के इलाक़े में चला जा। वहाँ मैं तुझे एक पहाड़ दिखाऊँगा। उस पर अपने बेटे को क़ुरबान कर दे। उसे ज़बह करके क़ुरबानगाह पर जला देना।"

सुबह-सवेरे इब्राहीम उठा और अपने गधे पर ज़ीन कसा। उसने अपने साथ दो नौकरों और अपने बेटे इसहाक़ को लिया। फिर वह क़ुरबानी को जलाने के लिए लकड़ी काटकर उस जगह की तरफ़ रवाना हुआ जो अल्लाह ने उसे बताई थी। सफ़र करते करते तीसरे दिन क़ुरबानी की जगह इब्राहीम को दूर से नज़र आई। उसने नौकरों से कहा, "यहाँ गधे के पास ठहरो। मैं लड़के के साथ वहाँ जाकर परस्तिश करूँगा। फिर हम तुम्हारे पास वापस आ जाएँगे।"

इब्राहीम ने क़ुरबानी को जलाने के लिए लकड़ियाँ इसहाक़ के कंधों पर रख दीं और ख़ुद छुरी और आग जलाने के लिए अंगारों का बरतन उठाया। दोनों चल दिए। इसहाक़ बोला, "अब्बू!" इब्राहीम ने कहा, "जी बेटा।" "अब्बू, आग और लकड़ियाँ तो हमारे पास

हैं, लेकिन क़ुरबानी के लिए भेड़ या बकरी कहाँ है?" इब्राहीम ने जवाब दिया, "अल्लाह ख़ुद क़ुरबानी के लिए जानवर मुहैया करेगा, बेटा।" वह आगे बढ़ गए।

चलते चलते वह उस मक़ाम पर पहुँचे जो अल्लाह ने उस पर ज़ाहिर किया था। इब्राहीम ने वहाँ क़ुरबानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ तरतीब से रख दीं। फिर उसने इसहाक़ को बाँधकर लकड़ियों पर रख दिया और छुरी पकड़ ली ताकि अपने बेटे को ज़बह करे। ऐन उसी वक़्त रब के फ़रिश्ते ने आसमान पर से उसे आवाज़ दी, "इब्राहीम, इब्राहीम!" इब्राहीम ने कहा, "जी, मैं हाज़िर हूँ।" फ़रिश्ते ने कहा, "अपने बेटे पर हाथ न चला, न उसके साथ कुछ कर। अब मैंने जान लिया है कि तू अल्लाह का ख़ौफ़ रखता है, क्योंकि तू अपने इकलौते बेटे को भी मुझे देने के लिए तैयार है।"

अचानक इब्राहीम को एक मेंढा नज़र आया जिसके सींग गुंजान झाड़ियों में फँसे हुए थे। इब्राहीम ने उसे ज़बह करके अपने बेटे की जगह क़ुरबानी के तौर पर जला दिया। उसने उस मक़ाम का नाम "रब मुहैया करता है" रखा। इसलिए आज तक कहा जाता है, "रब के पहाड़ पर मुहैया किया जाता है।"

> रब के फ़रिश्ते ने एक बार फिर आसमान पर से पुकारकर उससे बात की। “रब का फ़रमान है, मेरी ज़ात की क़सम, चूँकि तूने यह किया और अपने इकलौते बेटे को मुझे पेश करने के लिए तैयार था इसलिए मैं तुझे बरकत दूँगा और तेरी औलाद को आसमान के सितारों और साहिल की रेत की तरह बेशुमार होने दूँगा। तेरी औलाद अपने दुश्मनों के शहरों के दरवाज़ों पर क़ब्ज़ा करेगी। चूँकि तूने मेरी सुनी इसलिए तेरी औलाद से दुनिया की तमाम क़ौमें बरकत पाएँगी।”

हम देखते हैं कि अल्लाह ने इब्राहीम (ए.एस.) का ईमान कितनी सख़्ती से आज़माया। क्योंकि उसने उसे उसी बेटे को क़ुरबान करने को कहा, जो इब्राहीम का सही वारिस था। तो भी इब्राहीम फ़रमाँबरदार रहा। वह अपने बेटे को क़ुरबानगाह पर क़ुरबान करने के लिए तैयार था, लेकिन उस पर छुरी चलाने से पहले ही अल्लाह ने उसे रोक दिया। अल्लाह ने उसे मेंढा मुहैया किया, और इब्राहीम ने उसे अपने बेटे की जगह क़ुरबान किया।

इब्राहीम (ए.एस.) ने अपने आमाल से साबित किया कि मैं अल्लाह पर पूरा ईमान रखता हूँ। उसे यक़ीन था कि अल्लाह उसी बेटे के ज़रीए औलाद दे सकता था जो क़ुरबान होनेवाला था। इंजीले-मुक़द्दस, याक़ूब 2:23,

> इब्राहीम ने अल्लाह पर भरोसा रखा। इस बिना पर अल्लाह ने उसे रास्तबाज़ क़रार दिया।

अल्लाह ने इब्राहीम (ए.एस.) के लिए मेंढा मुहैया किया। यह क़ुरबानी वक़्ती तौर पर चढ़ाई गई, यानी उसका असर आरिज़ी था। लेकिन अल्लाह तमाम लोगों के गुनाहों के लिए एक क़ुरबानी मुहैया करनेवाला था। यह समझने के लिए आइए देखते हैं कि हज़रत यहया नबी ईसा अल-मसीह को देखकर क्या फ़रमाते हैं, इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 1:29,

> अगले दिन यहया ने ईसा को अपने पास आते देखा। उसने कहा, "देखो, यह अल्लाह का लेला [बर्रा] है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है।"

दिलचस्प बात यह है कि दर्जे-बाला हवाले में ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) लेला कहलाते हैं। ईसा अल-मसीह वही क़ुरबानी हैं जो अल्लाह की तरफ़ से तमाम इनसानों के गुनाहों के एवज़ चढ़ाई गई है। ख़ुद क़ुरबानी देने से अल्लाह ने एक ही वक़्त सारे गुनाहों का कफ़्फ़ारा अदा किया। अब बार बार क़ुरबानी पेश करने की ज़रूरत नहीं रही। यह आरिज़ी क़ुरबानी नहीं थी बल्कि अल्लाह ने ख़ुद यह अज़ीम क़ुरबानी पेश की ताकि तमाम औक़ात के तमाम गुनाह मिट जाएँ।

इंजीले-मुक़द्दस, इबरानियों 9:22 में दर्ज है कि ख़ून बहाए बग़ैर गुनाह की माफ़ी नामुमकिन है,

> न सिर्फ़ यह बल्कि शरीअत तक़ाज़ा करती है कि तक़रीबन हर चीज़ को ख़ून ही से पाक-साफ़ किया जाए बल्कि अल्लाह के हुज़ूर ख़ून पेश किए बग़ैर माफ़ी मिल ही नहीं सकती।

ख़ुलासा

- अल्लाह ने इब्राहीम (ए.एस.) को अपने बेटे को क़ुरबान करने का हुक्म दिया। इसमें इब्राहीम का ईमान परखा गया, और वह साबितक़दम निकला। इसी ईमान की बदौलत अल्लाह ने इब्राहीम को रास्तबाज़ ठहराया।
- अल्लाह ने इब्राहीम (ए.एस.) को बेटे को क़ुरबान करने से रोककर उसकी जगह उसे एक मेंढा मुहैया किया।
- ईसा अल-मसीह को अल्लाह का लेला कहा गया है जो दुनिया के गुनाह उठा ले जाता है। आप महज़ वक़्ती क़ुरबानी नहीं थे, बल्कि आप अल्लाह का लेला हैं जो दुनिया के गुनाह उठा ले गए हैं। यह दुनिया की तमाम क़ौमों के लिए अनमोल हक़ीक़त और बरकत है।
- हमने यह भी सीखा कि ख़ून बहाए बग़ैर गुनाह की माफ़ी नामुमकिन है। ईसा अल-मसीह का ख़ून ही इस क़ाबिल है कि गुनाह मिटाकर लोगों को अल्लाह की अदालत से बचाए।

आइए अब हम हज़रत मूसा (ए.एस.) पर ध्यान दें।

4

हज़रत मूसा और ख़ून

हज़रत मूसा (ए.एस.) को इसलिए अल्लाह से भेजा गया कि इसराईलियों को मिसरी क़ैद से बचाएँ। आप हलीम भी थे और अल्लाह के कलाम के फ़रमाँबरदार भी। अल्लाह ने आपको ज़बरदस्त तरीक़े से इस्तेमाल किया। हज़रत मूसा ने फ़िरऔन को बहुत-सारे निशान और मोजिज़े दिखाए ताकि फ़िरऔन को अल्लाह की क़ौम को छोड़ने पर मजबूर करे। मगर कलाम में लिखा है कि फ़िरऔन और उसके राहनुमाओं ने इन निशानों और मोजिज़ात को रद करके अल्लाह के लोगों को जाने न दिया।

आख़िर में अल्लाह ने एक अज़ीम निशान पेश करने का एलान किया। यह निशान क्या था? तौरेत, ख़ुरूज 11:1,5-7; 12:21-23,

तब रब ने मूसा से कहा, “अब मैं फ़िरऔन और मिसर पर आख़िरी आफ़त लाने को हूँ। इसके बाद वह तुम्हें जाने देगा बल्कि तुम्हें ज़बरदस्ती निकाल देगा।

तब बादशाह के पहलौठे से लेकर चक्की पीसनेवाली नौकरानी के पहलौठे तक मिसरियों का हर पहलौठा मर जाएगा। चौपाइयों के पहलौठे भी मर जाएँगे। मिसर की सरज़मीन पर ऐसा रोना-पीटना होगा कि न माज़ी में कभी हुआ, न मुस्तक़बिल में कभी होगा। लेकिन इसराईली और उनके जानवर बचे रहेंगे। कुत्ता भी उन पर नहीं भौंकेगा। इस तरह तुम जान लोगे कि रब इसराईलियों की निसबत मिसरियों से फ़रक़ सुलूक करता है।”

फिर मूसा ने तमाम इसराईली बुज़ुर्गों को बुलाकर उनसे कहा, “जाओ, अपने ख़ानदानों के लिए भेड़ या बकरी के बच्चे चुनकर उन्हें फ़सह की ईद के लिए ज़बह करो। ज़ूफ़े का गुच्छा लेकर उसे ख़ून से भरे हुए बासन में डुबो देना। फिर उसे लेकर ख़ून को चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा देना। सुबह तक कोई अपने घर से न निकले। जब रब मिसरियों को मार डालने के लिए मुल्क में से गुज़रेगा तो वह चौखट के ऊपरवाले हिस्से और दाएँ-बाएँ के

> बाज़ुओं पर लगा हुआ ख़ून देखकर उन घरों को छोड़ देगा। वह हलाक करनेवाले फ़रिश्ते को इजाज़त नहीं देगा कि वह तुम्हारे घरों में जाकर तुम्हें हलाक करे।”

अल्लाह ने मिसर में यह निशानात इसलिए पेश किए कि फ़िरऔन और उसके अफ़सर बनी इसराईल को जाने दें, लेकिन उन्होंने इन निशानों को रद किया। गो नौ मोजिज़ाना आफ़तें उन पर आईं ताहम उनके दिल सख़्त रहे। तब अल्लाह ने मूसा को फ़रमाया कि अब मैं एक आख़िरी आफ़त भेजूँगा जिस पर फ़िरऔन बनी इसराईल को ज़रूर जाने देगा। यह आख़िरी आफ़त क्या थी?

अल्लाह ने एलान किया कि मिसरियों के तमाम पहलौठे जानवरों समेत मार दिए जाएँगे, और यों ही हुआ। लेकिन बनी इसराईल के पहलौठे छूट गए। यह कैसे? अल्लाह ने इसराईलियों को फ़रमाया कि क़ुरबानी ज़बह करके उसका ख़ून दरवाज़े की चौखट के ऊपर और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर लगा दो। जब अल्लाह का फ़रिश्ता पहलौठों को मारने के लिए आया, तो उसने उन घरों को छोड़ दिया जिनकी चौखटों पर ख़ून लगा था। क़ुरबानी के ख़ून ने उन्हें रब की सज़ा से महफ़ूज़ रखा।

अल्लाह ने मिसरियों को उनकी ना-फ़रमानी और गुनाहों के बाइस यह सख़्त सज़ा दी। ग़ौर करें कि गो बनी इसराईल भी गुनाहगार थे तो भी अल्लाह ने उन्हें बचाया। बच जाने के लिए उन्हें क़ुरबानी का ख़ून दरवाज़े की चौखट पर लगाना था। बचने का कोई और तरीक़ा नहीं था।

जहाँ लेले का ख़ून नहीं था, वहाँ मारनेवाला फ़रिश्ता पहलौठे को मार डालता, ख़ाह उस घर में मिसरी हो या इसराईली। चौखट पर लगा हुआ ख़ून उस ख़ानदान को अल्लाह की अदालत और ग़ज़ब से बचाए रखता था।

अब ग़ौर कीजिए, इंजीले-मुक़द्दस में लिखा है कि दर-हक़ीक़त हमारे गुनाह जानवरों के ख़ून से माफ़ नहीं हो सकते। यह क्यों ? वजह यह है कि इनसान और जानवर की क़दर बराबर नहीं होती। इंजीले-मुक़द्दस, इबरानियों 10:4,

> क्योंकि मुमकिन ही नहीं कि बैल-बकरों का ख़ून गुनाहों को दूर करे।

हम पहले बाब में देख चुके हैं कि इब्तिदाई क़ुरबानी आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) का गुनाह ढाँपने के लिए पेश की गई, यानी उससे उनका कफ़्फ़ारा दिया गया था, हालाँकि जानवर का ख़ून इनसान के गुनाह को मिटा नहीं सकता। यहाँ वही बात है। लेले की क़ुरबानी से बनी इसराईल के पहलौठे बच तो गए, लेकिन उनके गुनाह पूरी तरह माफ़ न हुए। यों अल्लाह हज़रत दाऊद के ज़रीए ज़बूर 40:6-8 में फ़रमाता है,

> तू क़ुरबानियाँ और नज़रें नहीं चाहता था, लेकिन तूने मेरे कानों को खोल दिया। तूने भस्म होनेवाली क़ुरबानियों और गुनाह की क़ुरबानियों का तक़ाज़ा न किया। फिर

> मैं बोल उठा, “मैं हाज़िर हूँ जिस तरह मेरे बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है। ऐ मेरे ख़ुदा, मैं ख़ुशी से तेरी मरज़ी पूरी करता हूँ, तेरी शरीअत मेरे दिल में टिक गई है।”

अल्लाह तआला जानवरों के ख़ून की क़ुरबानी को नाकाफ़ी समझता है, क्योंकि वह लोगों को उनके गुनाहों से पाक-साफ़ नहीं कर सकता। इसके मुक़ाबले में इंजीले-मुक़द्दस फ़रमाती है कि ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) तमाम लोगों के गुनाहों की क़ुरबानी देने आए। उसी क़ुरबानी के ज़रीए हमें गुनाहों की माफ़ी हासिल होती है। इंजीले-मुक़द्दस, इबरानियों 10:10,

> और उसकी मरज़ी पूरी हो जाने से हमें ईसा मसीह के बदन के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस किया गया है।

ईसा अल-मसीह के ख़ून के वसीले से हम मख़सूस और मुक़द्दस ठहरते हैं। इससे हमारे तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं। हाँ, हम पाक-साफ़ हो जाते हैं जब हम उसे अपना नजातदहिंदा तसलीम करके अपनी पूरी ज़िंदगी उसके सुपुर्द कर देते हैं, यह वादा करके कि हम तेरी पैरवी करेंगे, हम तेरी हिदायात पर चलेंगे।

ख़ुलासा

- मिसरी और बनी इसराईल दोनों गुनाहगार थे। लेकिन जब इसराईलियों ने अपनी चौखट पर ख़ून लगाया तो वह बच गए। अल्लाह ने यह ख़ून क़बूल करके बनी इसराईल के पहलौठों को न मारा।
- अल्लाह ने बनी इसराईल को हुक्म दिया कि वह बचने के लिए लेले (बर्रा) ज़बह करके उनका ख़ून दरवाज़े के ऊपर और दाएँ-बाएँ लगाएँ।
- यह नामुमकिन है कि जानवरों का ख़ून लोगों के गुनाह मिटा दे। इसलिए अल्लाह ने ईसा अल-मसीह को भेज दिया ताकि वह हमारी ख़ातिर क़ुरबान हों। आपके ख़ून के वसीले से हमारे तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं और हम अल्लाह के सामने पाक-साफ़ हो जाते हैं।
- माफ़ी हासिल करने की चार शरायत हैं :
  - ► क़ुरबानी : आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) को क़ुरबानी के ज़रीए लिबास मिले।

    इब्राहीम (ए.एस.) को अल्लाह की तरफ़ से मेंढा मिला जो उसके बेटे की जगह क़ुरबान हुआ।

    मूसा ने अपने लोगों को हिदायत दी कि वह दरवाज़े के ऊपर और दाएँ-बाएँ के बाज़ुओं पर ख़ून लगाकर आनेवाले ग़ज़ब से छूट जाएँ।
  - ► अल्लाह तआला ख़ुद यह क़ुरबानी मुहैया करता है।

- ख़ून बहाए बग़ैर माफ़ी हासिल नहीं होती।
- जानवरों के ख़ून से इनसानों के गुनाह माफ़ नहीं होते। अल्लाह की मरज़ी थी कि एक ही शख़्सियत यानी ईसा अल-मसीह के ख़ून से इनसानों के गुनाह माफ़ हो जाएँ। वही अल्लाह का लेला हैं, वही कामिल और मुक़द्दस हैं। हमारे गुनाह सिर्फ़ और सिर्फ़ ईसा अल-मसीह के बहाए हुए ख़ून के वसीले से माफ़ होते हैं।

5

ईसा अल-मसीह—
कामिल और मुकम्मल क़ुरबानी

ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) अल्लाह तआला का वह कामिल और मुकम्मल क़ुरबानी हैं जिसका मनसूबा उसने तमाम गुनाहों को दूर करने के लिए बनाया था।

आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) का ज़िक्र करते वक़्त हमने देखा कि अल्लाह तआला ने ख़ुद एक क़ुरबानी पेश की ताकि उन्हें रास्तबाज़ी के लिबास पहनाए। फिर भी ख़ून की यह क़ुरबानी पूरी तरह उनके गुनाहों को मिटा नहीं सकता था।

अल्लाह तआला ने कश्ती के ज़रीए हज़रत नूह (ए.एस.) और उसके ख़ानदान को बचा लिया। सैलाब से बचकर नूह ने रब का शुक्र करके

उसकी परस्तिश की। इस सिलसिले में उसने क़ुरबानियाँ भी गुज़रानीं। अल्लाह ने अपने फ़ज़ल से नूह को बचाया, क्योंकि वह अल्लाह के हुज़ूर चलता था। वह न सिर्फ़ अल्लाह पर ईमान रखता था बल्कि अपने ईमान पर अमल भी करता था। इसी तरह लाज़िम है कि हम अल्लाह की दी हुई क़ुरबानी क़बूल करके ईसा अल-मसीह की क़ुरबानी पर ईमान लाएँ। कोई अपने आमाल से नजात नहीं पा सकता। यह बात नूह पर भी सादिक़ आती है। वह कश्ती बनाने के बाइस तो न बचा बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह के फ़ज़ल के बाइस। इंजीले-मुक़द्दस, इफ़िसियों 2:8-9,

> क्योंकि यह उसका फ़ज़ल ही है कि आपको ईमान लाने पर नजात मिली है। यह आपकी तरफ़ से नहीं है बल्कि अल्लाह की बख़्शिश है। और यह नजात हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली, इसलिए कोई अपने आप पर फ़ख़्र नहीं कर सकता।

इब्राहीम (ए.एस.) अपने बेटे को क़ुरबान करने तक वफ़ादार रहा, लेकिन जो लड़के की जगह क़ुरबान हुआ उसे अल्लाह ही ने मुहैया किया। हम इंजीले-मुक़द्दस में पढ़ते हैं कि गुनाह की मज़दूरी मौत है जबकि सिर्फ़ अल्लाह अबदी ज़िंदगी मुहैया करता है। इंजीले-मुक़द्दस, रोमियों 6:23,

> क्योंकि गुनाह का अज्र मौत है जबकि अल्लाह हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा के वसीले से हमें अबदी ज़िंदगी की मुफ़्त नेमत अता करता है।

आप और मैं सज़ाए-मौत के लायक़ हैं, क्योंकि हमने अल्लाह की नाफ़रमानी की है। लेकिन जिस तरह अल्लाह ने इब्राहीम (ए.एस.) को फ़िद्या के तौर पर मेंढा दिया ताकि उसे अपना बेटा क़ुरबान करना न पड़े, उसी तरह उसने हमारे लिए भी फ़िद्या दिया है। अल्लाह ने ईसा अल-मसीह को भेजा ताकि वह हमारी जगह क़ुरबान हों और हमें सज़ा की बजाए माफ़ी हासिल हो। इंजीले-मुक़द्दस, 2 कुरिंथियों 5:21,

> मसीह बेगुनाह था, लेकिन अल्लाह ने उसे हमारी ख़ातिर गुनाह ठहराया ताकि हमें उसमें रास्तबाज़ क़रार दिया जाए।

हज़रत मूसा इसलिए बनी इसराईल को मिसर की क़ैद से निकालने में कामयाब हुआ कि अल्लाह ने उन्हें दरवाज़े की चौखट पर लगे ख़ून के वसीले से बचाया। इसी तरह अल्लाह ने हमारी नजात का बंदोबस्त ईसा की क़ुरबानी से करवाया। अल्लाह का यह लेला हमारे गुनाहों की ख़ातिर क़ुरबान हुआ। इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 1:29,

> देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है।

ख़ुलासा

- ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) वह कामिल और मुकम्मल क़ुरबानी हैं जिससे हमारे गुनाहों और शर्म को ढाँपा जाता है और हमें माफ़ी मिलती है। वही जन्नत की वापसी का रास्ता हैं।
- इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 14:6 में ईसा अल-मसीह फ़रमाते हैं,

> राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता।

- ईसा अल-मसीह नजात का वाहिद वसीला हैं। इंजीले-मुक़द्दस, आमाल 4:12,

> किसी दूसरे के वसीले से नजात हासिल नहीं होती, क्योंकि आसमान के तले हम इनसानों को कोई और नाम नहीं बख़्शा गया जिसके वसीले से हम नजात पा सकें।

- अल्लाह ने अपने प्यार और हिकमत से हमें वही क़ुरबानी मुहैया की जो दुनिया के तमाम गुनाहों को दूर करने के क़ाबिल है। ईसा अल-मसीह हमारी ख़ातिर क़ुरबान हुए, वही वाहिद शख़्स जो बेऐब, ख़ालिस और क़ुद्दूस है, जिससे कभी भी गुनाह सरज़द नहीं हुआ।

- इंजीले-मुक़द्दस, रोमियों 10:9-10,

> अगर तू अपने मुँह से इक़रार करे कि ईसा ख़ुदावंद है और दिल से ईमान लाए कि अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया तो तुझे नजात मिलेगी। क्योंकि जब हम दिल से ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है, और जब हम अपने मुँह से इक़रार करते हैं तो हमें नजात मिलती है।

अल्लाह ने पूरी दुनिया को गुनाह और शर्म से बचाने के लिए ईसा अल-मसीह को भेजा। आप दूसरे अंबिया से मुख़्तलिफ़ थे। आप अल्लाह की तरफ़ से मख़सूस मसीह थे जिनके वसीले से इनसान के गुनाह उठा लिए गए।

6

ईसा अल-मसीह को कुल इख़्तियार हासिल है

अल्लाह तआला ने ईसा अल-मसीह को तमाम ताक़त और इख़्तियार बख़्शा है। इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 28:18,

> फिर ईसा ने उनके पास आकर कहा, “आसमान और ज़मीन का कुल इख़्तियार मुझे दे दिया गया है।”

अल्लाह ने तमाम इख़्तियार ईसा अल-मसीह के हाथों में सौंप दिया है। जब ईसा अल-मसीह इस दुनिया में थे तो आपने दिखाया कि मुझे तमाम इख़्तियार हासिल है।

क़ुदरत और समुंदर पर कुल इख़्तियार

इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 8:24-26,

> अचानक झील पर सख़्त आँधी चलने लगी और कश्ती लहरों में डूबने लगी। लेकिन ईसा सो रहा था। शागिर्द उसके पास गए और उसे जगाकर कहने लगे, “ख़ुदावंद, हमें बचा, हम तबाह हो रहे हैं!” उसने जवाब दिया, “ऐ कमएतक़ादो! घबराते क्यों हो?” खड़े होकर उसने आँधी और मौजों को डाँटा तो लहरें बिलकुल साकित हो गईं।

बीमारियों पर कुल इख़्तियार

इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 19:1-2,

> यह कहने के बाद ईसा गलील को छोड़कर यहूदिया में दरियाए-यरदन के पार चला गया। बड़ा हुजूम उसके पीछे हो लिया और उसने उन्हें वहाँ शफ़ा दी।

बदरूहों, जिन्न-भूत और इबलीस पर कुल इख़्तियार

इंजीले-मुक़द्दस, मरक़ुस 1:34,

> और ईसा ने बहुत-से मरीज़ों को मुख़्तलिफ़ क़िस्म की बीमारियों से शफ़ा दी। उसने बहुत-सी बदरूहें भी निकाल दीं, लेकिन उसने उन्हें बोलने न दिया, क्योंकि वह जानती थीं कि वह कौन है।

मौत पर कुल इख़्तियार

इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 11:17,39,43-44,

> वहाँ पहुँचकर ईसा को मालूम हुआ कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं।
>
> ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा दो।” लेकिन मरहूम की बहन मर्था ने एतराज़ किया, “ख़ुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।”
>
> फिर ईसा ज़ोर से पुकार उठा, “लाज़र, निकल आ!” और मुरदा निकल आया। अभी तक उसके हाथ और पाँव पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि उसका चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने उनसे कहा, “इसके कफ़न को खोलकर इसे जाने दो।”

गुनाह पर कुल इख़्तियार

इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 9:2-6,

> वहाँ एक मफ़लूज आदमी को चारपाई पर डालकर उसके पास लाया गया। उनका ईमान देखकर ईसा ने कहा, “बेटा, हौसला रख। तेरे गुनाह माफ़ कर दिए गए हैं।”
>
> यह सुनकर शरीअत के कुछ उलमा दिल में कहने लगे, “यह कुफ़र बक रहा है!”
>
> ईसा ने जान लिया कि यह क्या सोच रहे हैं, इसलिए उसने उनसे पूछा, “तुम दिल में बुरी बातें क्यों सोच रहे हो? क्या मफ़लूज से यह कहना ज़्यादा आसान है कि ‘तेरे गुनाह माफ़ कर दिए गए हैं’ या यह कि ‘उठ और चल-फिर’? लेकिन मैं तुमको दिखाता हूँ कि इब्ने-आदम को वाक़ई दुनिया में गुनाह माफ़ करने का इख़्तियार है।” यह कहकर वह मफ़लूज से मुख़ातिब हुआ, “उठ, अपनी चारपाई उठाकर घर चला जा।”

जो अल-मसीह से लिपट जाए वह महफ़ूज़ रहेगा

जब ख़ुद ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) हमारे साथ हों तो कोई भी हम पर ग़ालिब नहीं आ सकता। इसी लिए हज़रत पौलुस इंजीले-मुक़द्दस रोमियों 8:38-39 में क्या ख़ूब फ़रमाते हैं,

> क्योंकि मुझे यक़ीन है कि हमें उसकी मुहब्बत से कोई चीज़ जुदा नहीं कर सकती : न मौत और न ज़िंदगी, न फ़रिश्ते और न हुक्मरान, न हाल और न मुस्तक़बिल, न ताक़तें, न नशेब और न फ़राज़, न कोई और मख़लूक़ हमें अल्लाह की उस मुहब्बत से जुदा कर सकेगी जो हमें हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा में हासिल है।

अल-मसीह के पैरोकारों पर कोई भी ताक़त फ़तह नहीं पा सकती। जिसने ईसा अल-मसीह को अपना ख़ुदावंद और नजातदहिंदा बना लिया हो न किसी बदरूह को, न इबलीस को उसकी ज़िंदगी पर इख़्तियार है!

जो अल-मसीह से लिपट जाए वह उसी के से काम करेगा

जो ईसा अल-मसीह पर ईमान रखे वह ज़ैल में सब कुछ उसके नाम से कर सकता है। दुआ करें, ईमान में मज़बूत रहें और अल्लाह आपकी दुआओं को सुनकर पूरा कर देगा। इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 14:12-13,

> मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही कुछ करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ़ यह बल्कि वह इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ। और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को फ़रज़ंद में जलाल मिल जाए।

अगर आप अपने दिल में मानें कि ईसा अल-मसीह ख़ुदावंद हैं और कि अल्लाह ने उन्हें हमारी ख़ातिर क़ुरबान करके तीसरे दिन ज़िंदा किया, तो फिर आपको भी उनका इख़्तियार हासिल होगा, आप भी इसी तरह के मोजिज़े कर पाएँगे। ईसा अल-मसीह के नाम से अल्लाह से दुआ करें तो आप भी ऐसे मोजिज़े का तजरिबा करेंगे। अल्लाह तआला आपके ज़रीए दूसरों को भी मोजिज़ाना तरीक़े से बरकत फ़रमाएगा।

ईसा अल-मसीह का सबसे बड़ा मोजिज़ा यह है कि आपने गुनाह को शिकस्त दी है। ईसा अल-मसीह की पैरवी करने से आपकी ज़िंदगी पर गुनाह का इख़्तियार ख़त्म हो गया है, और आप अल्लाह के ख़ानदान में शामिल हो गए हैं। अल्लाह आपको इस्तेमाल करेगा ताकि आपका ख़ानदान, आपके दोस्त, आपके गाँववाले और आपकी क़ौम भी गुनाह के बंधन से आज़ाद हो जाएँ।

ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) तमाम इख़्तियार के मालिक हैं। उनकी पैरवी करें तो आप गुनाह और उसकी सज़ा से बचकर जन्नत की नेमत पाएँगे।

7

तख़लीक़ से लेकर नजात तक

अल्लाह का मनसूबा समझने के लिए हम फिर से पहले अबवाब का मुतालआ करेंगे ताकि पता चले कि अल्लाह किस तरह नबियों के ज़रीए इनसान से हमकलाम हुआ और कि ईसा अल-मसीह ने किस तरह इनसान की बिगड़ी हुई हालत दुबारा बहाल की।

आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) अल्लाह की सूरत पर बनाए गए। इसका यह मतलब है कि वह तमाम दूसरी मख़लूक़ात से मुख़्तलिफ़ थे। वह या तो फ़रमाँबरदार या ना-फ़रमान हो सकते थे। अल्लाह रूह है। उसका जिस्म नहीं है। जब लिखा है कि अल्लाह ने उन्हें अपनी सूरत पर बनाया तो हम यह मतलब निकाल सकते हैं कि उसने इनसान को फ़रमाँबरदारी या ना-फ़रमानी चुनने के क़ाबिल बनाया। इसी लिए

अल्लाह ने बाग़े-अदन में एक दरख़्त लगाया जिसका नाम अच्छे और बुरे की पहचान का दरख़्त था।

अल्लाह ने बहुत-सारे दरख़्त बनाए थे और उनमें खाने की कई अक़साम थीं। लेकिन उनके अलावा उसने अच्छे और बुरे की पहचान का दरख़्त भी बनाकर आदम और हव्वा को उसका फल खाने से मना किया था। अल्लाह ने उन्हें आगाह किया कि अगर कभी इस दरख़्त से खाया तो यक़ीनन मर जाओगे।

लेकिन इबलीस ने साँप की शक्ल में हाज़िर होकर हव्वा को धोका दिया। उसने उससे पूछा, "क्या तमाम दरख़्तों से खाना मना है?" हव्वा ने इनकार करके कहा, "नहीं, हम सब दरख़्तों से खा सकते हैं सिवाए बुरे और अच्छे की पहचान के दरख़्त के। अगर उस दरख़्त से खाया, तो मर जाएँगे।" लेकिन इबलीस ने चालाकी से कहा, "तुम कभी नहीं मरोगे बल्कि अल्लाह के बराबर हो जाओगे। इसी लिए अल्लाह ने तुमको खाने से मना किया है।" इबलीस शुरू ही से झूठा रहा है।

तब हव्वा ने वह फल खाया और आदम को भी खिलाया। फल को खाते ही उन्हें मालूम हुआ कि नंगे हैं, और उन्हें पहली बार शर्म महसूस हुई। जब हमें शर्म आती है तो हम क्या करते हैं? हम छिपने की कोशिश करते हैं। उन्होंने ऐसा ही किया। उन्होंने पत्तों से अपने जिस्म ढाँपने की कोशिश की, और वह अल्लाह से छिप गए।

जब अल्लाह बाग़ में आया तो उसने आदम को बुलाकर कहा, “आदम तू कहाँ है?” ध्यान दीजिए कि गो हव्वा ने पहले फल खाया था, तो भी अल्लाह ने आदम को पहले बुलाया। इसका मतलब यह है कि मर्द हज़रात अपने अपने ख़ानदान के ज़िम्मेदार हैं।

अल्लाह ने उनसे पूछा, “तुम मुझसे क्यों छिप गए?” आदम ने जवाब दिया, “हम नंगे हैं, इसलिए छिप गए।” अल्लाह ने कहा, “तुमको किसने बताया कि नंगे हो? क्या तुमने उस दरख़्त से खाया जो मैंने मना किया था?” आदम ने कहा, “जी, लेकिन हव्वा ने मुझे दिया तो मैंने खाया।” तब हव्वा ने कहा, “हाँ, मैंने उसे तो दिया, लेकिन साँप ने मुझे खाने पर उकसाया।” जब भी ग़लत काम हो तो लोग एक दूसरे पर इलज़ाम लगाकर बहाने बनाने लगते हैं।

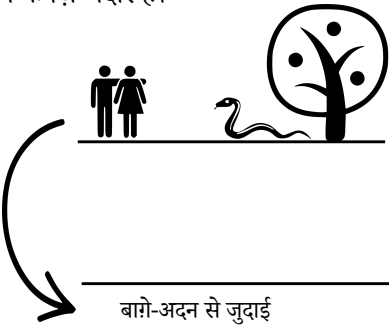
बाग़े-अदन से जुदाई

आदम और हव्वा की ना-फ़रमानी के बाइस अल्लाह को उन्हें अपनी हुज़ूरी से दूर करना पड़ा। उसने पहले ही उन्हें आगाह किया था कि अगर इस दरख़्त से खाया तो मर जाओगे। अल्लाह का मतलब जिस्मानी मौत नहीं था बल्कि रूहानी मौत जो कि अल्लाह से अलहदगी है। बाग़े-अदन

से निकालने से पहले अल्लाह ने एक ख़ास काम किया। उसने पहली क़ुरबानी पेश की ताकि उनकी शरमिंदगी ढाँपी जाए। तौरेत में लिखा है कि अल्लाह ने उनके नंगेपन को जानवर की खालों से ढाँपकर उनका कफ़्फ़ारा दिया। हम तौरेत में यह भी पढ़ते हैं कि जो जानवर अल्लाह ने बनाए वह सब ज़िंदा थे। इसका मतलब है कि अल्लाह ने पहली क़ुरबानी पेश की ताकि जानवरों की खालों से उनकी शरमिंदगी ढाँपे। लेकिन इन जानवरों के ख़ून में वह ताक़त नहीं थी कि उनकी शर्म और ना-फ़रमानी पूरी तरह ख़त्म करे। ताहम उन्हें अल्लाह से दूर जाना पड़ा।

उस वक़्त से लेकर आज तक तमाम इनसान अल्लाह से दूर पैदा हुए हैं। एक भी नहीं जो अल्लाह के हुज़ूर पैदा हुआ हो। हम सबके सब अल्लाह से दूर हैं और तमाम इनसानियत में अहम सवाल यह है कि

हम अल्लाह के पास वापस कैसे पहुँच सकते हैं?

आदम और हव्वा (अलैहुमा अस-सलाम) की ना-फ़रमानी की बजाए अल्लाह हमसे मुहब्बत करने से बाज़ न आया। अपना यह प्यार और मुहब्बत दिखाने के लिए उसने बहुत-सारे अंबिया को भेजा ताकि हम अल्लाह को याद करके उस तक पहुँचने की कोशिश जारी रखें। इस सिलसिले में अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम ख़लीलुल्लाह (अल्लाह के दोस्त), हज़रत

मूसा कलीमुल्लाह (अल्लाह से बात करनेवाले), हज़रत दाऊद और हज़रत सुलेमान (ए.एस.) जैसे नबियों को भेजा।

अल्लाह ने इन हज़रात के ज़रीए बहुत अज़ीम काम किए, मगर वह सबके सब आदम और हव्वा की औलाद होने के बाइस दीगर इनसानों की तरह अल्लाह से दूर थे। गो अल्लाह ने सबको अनोखे तरीक़े से इस्तेमाल किया तो भी उनमें से एक भी बेगुनाह नहीं था। यह बात तौरेत और ज़बूर में वाज़िह तौर पर नज़र आती है।

इब्राहीम (ए.एस.) : आपकी बीवी सारा बहुत ख़ूबसूरत थीं, लेकिन दो दफ़ा आपने कहा कि यह मेरी बहन है। इस बयान का आधा हिस्सा सच भी था, क्योंकि वह आपकी सौतेली बहन थीं, मगर सच्चाई का आधा हिस्सा झूठ ही है। इस झूठ की वजह से सारा दो मरतबा दो मर्दों की ज़द में आने के ख़तरे से बाल बाल बच गईं।

मूसा (ए.एस.) : जब आपने किसी मिसरी को बनी इसराईल के एक आदमी को पीटते देखा तो उस मिसरी को क़त्ल किया।

दाऊद (ए.एस.) : आपने ज़िना करके औरत के ख़ावंद को क़त्ल करवाया।

सुलेमान (ए.एस.) : आपने हज़ार औरतों से शादी की, जिनमें से कुछ ने आप को शिर्क करने पर उकसाया।

इससे ज़ाहिर होता है कि हम सब अल्लाह से दूर हैं। हममें से कोई नहीं जो अल्लाह के हुज़ूर पैदा हुआ हो, क्योंकि हम सब आदम और हव्वा की औलाद हैं। सिर्फ़ ईसा अल-मसीह फ़रक़ हैसियत रखते हैं। आपका एक और नाम रूहुल्लाह है। एक और नाम कलिमतुल्लाह है। आप अल्लाह की तरफ़ से आए ताकि अल्लाह के हुज़ूर पहुँचने का ज़रीअ बन जाएँ। ईसा अल-मसीह वह वाहिद शख़्स हैं जो फ़रक़ हैं। इंजीले-मुक़द्दस फ़रमाती है कि ईसा अल-मसीह कुँवारी मरियम से पैदा हुए। ईसा जिस्मानी बाप से पैदा न हुए बल्कि अल्लाह के रूह की क़ुदरत से।

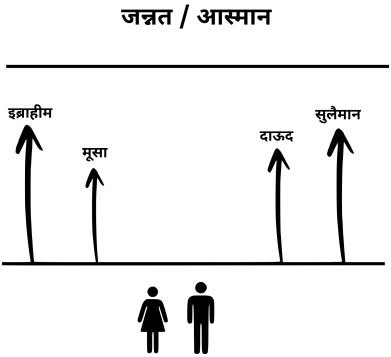

दीगर नबी न अपने आपको, न हमको जन्नत में पहुँचा सकते हैं।

ग़रज़ बीबी मरियम और अल्लाह के रूह की क़ुदरत से पैदा होने के बाइस वह बाक़ी तमाम अंबिया से सरासर फ़रक़ हैं।

तस्वीर में जो तीर नीचे की तरफ़ इशारा करता है वह ईसा अल-मसीह की नुमाइंदगी करता है। आप अल्लाह से दुनिया में नाज़िल हुए ताकि हमें नजात बख़्श दें। बाक़ी तमाम अंबिया ख़ाली आदम और हव्वा की नसल से थे। लेकिन ईसा अल-मसीह रूहुल-क़ुद्स से हैं। इसलिए आप कामिल हैं, और आपकी ज़िंदगी पर गुनाह का असर न पड़ा। इंजीले-मुक़द्दस फ़रमाती है कि आप सौ फ़ीसद पाक और सालिह थे बल्कि आप में कोई भी ऐब पाया न गया।

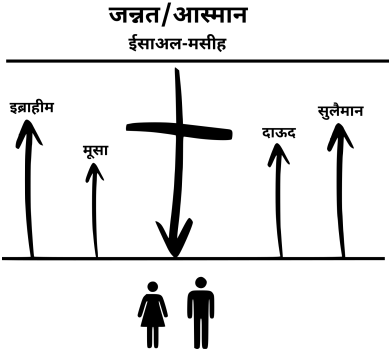

अल-मसीह ने जन्नत से उतरकर अपनी जान दी ताकि हम जन्नत में पहुँच सकें।

आपको याद होगा कि आदम और हव्वा की ना-फ़रमानी के नतीजे में मौत दुनिया में आई। हज़रत ईसा ने कभी भी कोई ग़लत काम न किया, लिहाज़ा लाज़िम नहीं था कि आप वफ़ात पाएँ। आपको हमेशा इस दुनिया में ज़िंदा रहना चाहिए था। इंजीले-मुक़द्दस फ़रमाती है कि गुनाह और ना-फ़रमानी का अज्र मौत है। ईसा अल-मसीह से कभी भी गुनाह सरज़द न हुआ, लिहाज़ा आपको मरने की ज़रूरत नहीं थी।

लेकिन अल्लाह ने अज़ल से मुक़र्रर किया कि आप तमाम दुनिया के गुनाहों के बदले में क़ुरबान हो जाएँगे। आपको मरना नहीं था, लेकिन आप तमाम औक़ात के गुनाहों के एवज़ क़ुरबान हुए। आप इसलिए भेजे गए कि जो भी आप पर ईमान लाकर आपकी पैरवी करे वह नजात पाए। क्योंकि आपने वही क़ुरबानी दी जो हमें सौ फ़ीसद यक़ीन दिलाती है कि हम नजातयाफ़्ता हैं, कि हम जन्नत में वापस पहुँचकर अबद तक अल्लाह के हुज़ूर रहेंगे।

ईसा अल-मसीह ने यह सब कुछ तमाम दुनिया की ख़ातिर सरंजाम दिया, और वह आपके नजातदहिंदा भी होना चाहते हैं। अगर आप आज तसलीम करें कि वह आपके वास्ते क़ुरबान हुए हैं तो अल्लाह तआला आपके तमाम गुनाहों को माफ़ फ़रमाएगा। तब आप सौ फ़ीसद यक़ीन रख सकेंगे कि जन्नत में पहुँचेंगे जहाँ अल्लाह ख़ुद है।

क्या आप अभी ईसा अल-मसीह को अपनी ज़िंदगी में लाना चाहते हैं? मतलब है कि आप उनकी पैरवी करना और उनका हर फ़रमान मानना चाहते हैं जो कि इंजीले-मुक़द्दस में दर्ज है। अगर आप यह चाहते हैं तो दुआ करके अपनी पूरी ज़िंदगी ईसा अल-मसीह के नाम से अल्लाह के सुपुर्द करें, उस ईसा अल-मसीह को जो आपके नजातदहिंदा हैं।

ईसा अल-मसीह में नई ज़िंदगी कैसे गुज़ारनी है?

8

ईमान का इक़रार

इंजीले-मुक़द्दस, 1 तीमुथियुस 2:5-6,

> क्योंकि एक ही ख़ुदा है और अल्लाह और इनसान के बीच में एक ही दरमियानी है यानी मसीह ईसा, वह इनसान जिसने अपने आपको फ़िद्या के तौर पर सबके लिए दे दिया ताकि वह मख़लसी पाएँ।

अल्लाह तआला एक ही है। वह वाहिद है, और ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) उसके और इनसान के दरमियानी हैं। इसी लिए ईसा ने हमारी ख़ातिर अपनी जान दी। ईमानदारों को एक ही राह पर चलना है। जो ईमान लाए वह दर्जे-बाला आयत के मुताबिक़ इक़रार करता है कि

मैं ईमान रखता हूँ एक ही ख़ुदा क़ादिरे-मुतलक़ पर और एक ही दरमियानी ईसा अल-मसीह पर जिन्होंने अपनी जान फ़िद्या के तौर पर देकर हमें हमारे गुनाहों से छुड़ाया।

शहादत की एक और सूरत इंजीले-मुक़द्दस, रोमियों 10:9-10 में क़लमबंद है। वहाँ ईसा अल-मसीह पर ईमान लाने का यह इक़रार दर्ज है कि

अगर तू अपने मुँह से इक़रार करे कि ईसा ख़ुदावंद है और दिल से ईमान लाए कि अल्लाह ने उसे मुरदों में से ज़िंदा कर दिया तो तुझे नजात मिलेगी। क्योंकि जब हम दिल से ईमान लाते हैं तो अल्लाह हमें रास्तबाज़ क़रार देता है, और जब हम अपने मुँह से इक़रार करते हैं तो हमें नजात मिलती है।

इन आयात के मुताबिक़ लाज़िम है कि हम अपने मुँह से इक़रार करें कि ईसा अल-मसीह ख़ुदावंद हैं और कि अल्लाह ने उन्हें मुरदों में से जिलाया है। अगर आप अपने पूरे दिल से ऐसा करें तो आप नजात हासिल करेंगे।

9

मुहब्बत के फ़रायज़

इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 22:37-40,

> ईसा ने जवाब दिया, “‘रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।’ यह अव्वल और सबसे बड़ा हुक्म है। और दूसरा हुक्म इसके बराबर यह है, ‘अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।’ तमाम शरीअत और नबियों की तालीमात इन दो अहकाम पर मबनी हैं।”

अपने पूरे दिल, पूरी ताक़त और पूरी जान से अल्लाह से मुहब्बत करें। जो कुछ भी करें, मुहब्बत से करें। मुहब्बत के बग़ैर शरीअत नाकाफ़ी

है। इनसान को ख़ालिसतन अपने पूरे दिल से अल्लाह से प्यार करना है।

दर्जे-ज़ैल हवाले में ईसा अल-मसीह की पैरवी करने के कुछ अमली क़दम बयान किए गए हैं। इंजीले-मुक़द्दस, आमाल 2:37-45,

> पतरस की यह बातें सुनकर लोगों के दिल छिद गए। उन्होंने पतरस और बाक़ी रसूलों से पूछा, "भाइयो, फिर हम क्या करें?"
>
> पतरस ने जवाब दिया, "आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह माफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। क्योंकि यह देने का वादा आपसे और आपके बच्चों से किया गया है, बल्कि उनसे भी जो दूर के हैं, उन सबसे जिन्हें रब हमारा ख़ुदा अपने पास बुलाएगा।"
>
> पतरस ने मज़ीद बहुत-सी बातों से उन्हें नसीहत की और समझाया कि "इस टेढ़ी नसल से निकलकर नजात पाएँ।" जिन्होंने पतरस की बात क़बूल की उनका बपतिस्मा हुआ। यों उस दिन जमात में तक़रीबन 3,000 अफ़राद का इज़ाफ़ा हुआ। यह ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे।

> सब पर ख़ौफ़ छा गया और रसूलों की तरफ़ से बहुत-से मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए गए। जो भी ईमान लाते थे वह एक जगह जमा होते थे। उनकी हर चीज़ मुश्तरका होती थी। अपनी मिलकियत और माल फ़रोख़्त करके उन्होंने हर एक को उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ दिया।

जिसे ईसा अल-मसीह के हैरानकुन और नजातबख़्श काम की समझ आए वह ख़ुशी के मारे यह कुछ दूसरों तक पहुँचाना चाहेगा। हज़रत पतरस उन रसूलों में से एक थे जो ख़ुशख़बरी की मुनादी करते थे। एक दिन जब वह ईसा अल-मसीह की ख़ुशख़बरी का पैग़ाम सुना रहे थे तो बेशुमार सुननेवालों के दिल रूहुल-क़ुद्स से हिल गए। उन्होंने हज़रत पतरस से सवाल किया कि हम क्या करें? पतरस ने जवाब दिया कि

- तौबा करो।
- बपतिस्मा यानी पाक ग़ुस्ल लो।
- अपने गुनाहों की माफ़ी पाओ।
- रूहुल-क़ुद्स को पाओ।

  मतलब यह है कि तौबा करने के बाद आपको पाक ग़ुस्ल लेने की ज़रूरत है। पाक ग़ुस्ल इस बात का निशान है कि आपके गुनाह माफ़ हुए हैं और आपको रूहुल-क़ुद्स मिल गया है।
- दूसरे ईमानदारों के साथ रिफ़ाक़त रखो।
- अल्लाह के कलाम से प्यार करो।

मतलब यह है कि आप रोज़ाना उसे पढ़ें और प्यासे और वफ़ादार दिल से उसका मुतालआ करें ताकि अल्लाह की मरज़ी पूरी कर पाएँ।

- उस पाक रिफ़ाक़ती खाने में जो ख़ुदावंद की याद में खाया जाता है शरीक होते रहो।
- दुआ के साथ साथ रोज़ा भी रखो।
- अपनी पैदावार का दसवाँ हिस्सा देकर ज़रूरतमंदों की मदद करो।

अब आइए हम दर्जे-बाला हिदायात पर मज़ीद ग़ौर करें।

तौबा

तौबा का मतलब यह है कि ग़लत रास्ते पर चलनेवाला अपनी ग़लती तसलीम करे और यू-टर्न करके दुरुस्त राह पर चलने लगे। तौबा के चार अक़दाम होते हैं :

- अल्लाह के सामने तसलीम करो कि मैं ग़लत राह पर चल रहा हूँ।
- अल्लाह से माफ़ी माँगो।
- चोरी का माल वापस करके मुमकिना हद तक दूसरों को पहुँचाया नुक़सान दूर करो।
- बुरी आदतें और आमाल छोड़कर सच्ची राह पर चलना शुरू करो।

कुछ लोग मुँह से तो तौबा करते हैं, लेकिन उनकी ज़िंदगी में इसका कोई असर नज़र नहीं आता बल्कि वह अपने बुरे काम जारी रखते हैं। गो वह कहते हैं कि हम ईमान लाए हैं, लेकिन वह ग़लत काम करने से परहेज़

नहीं करते। अल्लाह ऐसे सुलूक से नफ़रत रखता है, और उसे मालूम है कि यह असली तौबा नहीं है।

बपतिस्मा

बपतिस्मा लेनेवाला दीगर ईमानदारों के साथ कहीं जाए जहाँ पानी हो। दूसरों के सामने ही वह इक़रार करे कि मैं गुनाहगार हूँ, और ईसा अल-मसीह मेरे मसीह और नजातदहिंदा हैं। फिर कोई बपतिस्मायाफ़्ता ईमानदार उसे पानी में ग़ोता लगवाए। यह अमल ईसा अल-मसीह का हुक्म है। हर ईमान लानेवाले के लिए लाज़िम है कि वह बपतिस्मा ले।

बपतिस्मा लेने पर ईमानदार की नई ज़िंदगी शुरू हो जाती है। उसकी पुरानी ज़िंदगी जाती रही, उसे पुरानी चीज़ें छोड़कर नई ज़िंदगी गुज़ारनी है। अब वह ईसा अल-मसीह की मदद से नेक और पाक ज़िंदगी गुज़ारना चाहता है। बपतिस्मा के ग़ोते का क्या मक़सद है? बपतिस्मे से हम ईसा अल-मसीह के साथ मौत में से गुज़रकर जी उठते हैं। अब हम उसकी क़ुदरत से नई ज़िंदगी गुज़ारेंगे। जो भी ईसा अल-मसीह में मरकर जी उठे उसकी पुरानी गुनाहआलूदा ज़िंदगी पीछे रह गई है, और अब उसे नजात मिल गई है, अब उसके गुनाह माफ़ हुए हैं। इंजीले-मुक़द्दस, गलतियों 2:20-21,

> और यों मैं ख़ुद ज़िंदा न रहा बल्कि मसीह मुझमें ज़िंदा है। अब जो ज़िंदगी मैं इस जिस्म में गुज़ारता हूँ वह

> अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान लाने से गुज़ारता हूँ। उसी ने मुझसे मुहब्बत रखकर मेरे लिए अपनी जान दी। मैं अल्लाह का फ़ज़ल रद करने से इनकार करता हूँ। क्योंकि अगर किसी को शरीअत की पैरवी करने से रास्तबाज़ ठहराया जा सकता तो इसका मतलब यह होता कि मसीह का मरना अबस [बेफ़ायदा] था।

इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 28:19,

> इसलिए जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो।

ईसा अल-मसीह ने अपने शागिर्दों को हुक्म दिया कि वह तमाम लोगों को ख़ुशख़बरी सुनाकर उन्हें बपतिस्मा दें। इस बपतिस्मा को बाप, फ़रज़ंद, और रूहुल-क़ुद्स के नाम से देना है। जब भी बपतिस्मा यानी पाक ग़ुस्ल दिया जाए तो देनेवाले को साथ साथ कहना है कि मैं आपको बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा देता हूँ।

यह कहते हुए आप नए ईमानदार को पानी में ग़ोता लगवाएँ। इस तरह हम इक़रार करते हैं कि यह आदमी अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ के नाम से बपतिस्मा ले रहा है, उसी ख़ुदा के नाम से जो बाप और ख़ालिक़ की हैसियत से हम पर ज़ाहिर हुआ, जो फ़रज़ंद और नजातदहिंदा ईसा

अल-मसीह की हैसियत से हम पर ज़ाहिर हुआ और जो हमारे मुशीर और राहनुमा रूहुल-क़ुद्स की हैसियत से हम पर ज़ाहिर हुआ है।

बपतिस्मा देने से पहले और बाद में बपतिस्मा लेनेवाले के लिए बरकत की दुआ माँगें। दुआ माँगें कि वह अल्लाह की बादशाहत की तरक़्क़ी का बाइस बनकर यह ख़ुशख़बरी अपने अज़ीज़ो-अक़ारिब के साथ बाँटने में कामयाब हो जाए।

गुनाहों की यक़ीनी माफ़ी

बहुत-सारे लोगों को मालूम नहीं कि उनके गुनाह माफ़ हुए हैं या नहीं। अगर आप तौबा करके पूरे दिल से ईसा के पीछे हो लिए हों और बपतिस्मा लिया हो तो आपके गुनाह माफ़ हुए हैं।

> माफ़ी के बारे में शक की गुंजाइश ही नहीं। आप सौ फ़ीसद यक़ीन कर सकते हैं कि आपके गुनाह माफ़ हुए हैं, कि आप अल्लाह के हुज़ूर अबदी ज़िंदगी गुज़ारेंगे। यह पक्की बात है कि आप नजातयाफ़्ता हैं, कि आपकी मनज़िले-मक़सूद जन्नत है।

रूहुल-क़ुद्स पाना

कुछ ऐसी मख़लूक़ात होती हैं जो अल्लाह से भेजे हुए फ़रिश्ते हैं। इंजीले-मुक़द्दस के मुताबिक़ रूहुल-क़ुद्स फ़रिश्ता नहीं है। वह ख़ुद ही अल्लाह है। इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 4:24,

> अल्लाह रूह है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चाई से उसकी परस्तिश करें।

अल्लाह तआला रूह है, और हर ईमानदार रूहुल-क़ुद्स यानी पाक रूह के वसीले से अल्लाह की इबादत करता है। जो भी ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह पर ईमान लाए उसे रूहुल-क़ुद्स मिल जाता है। अल्लाह का रूह उसके दिल में सुकूनत करता है। इंजीले-मुक़द्दस, रोमियों 8:9,

> लेकिन आप पुरानी फ़ितरत के इख़्तियार में नहीं बल्कि रूह के इख़्तियार में हैं। शर्त यह है कि रूहुल-क़ुद्स आप में बसा हुआ हो। अगर किसी में मसीह का रूह नहीं तो वह मसीह का नहीं।

अल्लाह का रूह यानी रूहुल-क़ुद्स हर उस शख़्स में बसता है जो ईसा अल-मसीह पर ईमान लाया है। रूहुल-क़ुद्स उसे क़ुव्वत अता करता है ताकि वह पूरी दुनिया को ख़ुशख़बरी सुना सके। इंजीले-मुक़द्दस, लूक़ा 24:42-49 में ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) फ़रमाते हैं,

> कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, मसीह दुख उठाकर तीसरे दिन मुरदों में से जी उठेगा। फिर यरूशलम से शुरू करके उसके नाम में यह पैग़ाम तमाम क़ौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके गुनाहों की माफ़ी पाएँ। तुम इन बातों के गवाह हो। और मैं तुम्हारे पास उसे भेज दूँगा जिसका वादा मेरे बाप ने किया है। फिर तुमको आसमान की क़ुव्वत से मुलब्बस किया जाएगा। उस वक़्त तक शहर से बाहर न निकलना।

रूहुल-क़ुद्स की मामूरी हासिल करने के लिए ईसा अल-मसीह के पैरोकारों को क्या करना है?

- दिल से यक़ीन करें कि ईसा अल-मसीह अल्लाह के फ़रज़ंद और हमारे नजातदहिंदा और ख़ुदावंद हैं।
- अगर आपकी ज़िंदगी में गुनाह हो, तो तौबा करके अल्लाह की इताअत करें, क्योंकि इंजीले-मुक़द्दस का फ़रमान है कि सिर्फ़ वह जो अल्लाह के अहकाम के मुताबिक़ चलते हैं रूहुल-क़ुद्स से मामूर हो सकते हैं।
- इंजीले-मुक़द्दस में इसका ज़िक्र है कि एक ईमानदार दूसरे ईमानदार पर हाथ रखता है ताकि उसे रूहुल-क़ुद्स मिल जाए।
- जो रूहुल-क़ुद्स से मामूर होना चाहे, वह अल्लाह पर भरोसा रखकर जान ले कि डरने की कोई ज़रूरत नहीं। अगर हम अल्लाह से रूहुल-

क़ुद्स माँगें तो वह ज़रूर हमारी सुनेगा, क्योंकि वह हमसे बेहद प्यार करता है।

- जिसे रूहुल-क़ुद्स का बपतिस्मा मिले उस पर रूहुल-क़ुद्स का असर नज़र आएगा। बाज़ औक़ात यह मामूरी ग़ैरज़बान बोलने में ज़ाहिर होती है। ऐसा शख़्स अपना मुँह खोलकर ऐसी ज़बान बोलने लगता है जिससे वह पहले नावाक़िफ़ था। अकसर वह यह नई ज़बान दुआ और परस्तिश करते वक़्त इस्तेमाल करेगा। यह पाक रूह के वसीले से सरंजाम होता है, क्योंकि वही ग़ैरज़बान में बात करने के क़ाबिल बना देता है। लेकिन आपको मालूम होना चाहिए कि रूहुल-क़ुद्स ज़बरदस्ती यह कुछ नहीं करवाता। ऐसा ईमानदार ईमान की बिना पर अपना मुँह खोलकर ग़ैरज़बान बोलने लगता है। कभी-कभार वह नबुव्वत भी करने लगता है, या वह किसी और तरीक़े से अपनी ख़ुशी का इज़हार करता है।
- याद रहे कि रूहुल-क़ुद्स से मामूर होने का मक़सद यह है कि ईमानदार अल्लाह को ज़्यादा से ज़्यादा जान ले और इख़्तियार से दूसरों तक ख़ुशख़बरी पहुँचा सके।

मसीह की जमात में शरीक होना

इंजीले-मुक़द्दस, इबरानियों 10:24-25,

> और आएँ, हम इस पर ध्यान दें कि हम एक दूसरे को किस तरह मुहब्बत दिखाने और नेक काम करने पर उभार सकें। हम बाहम जमा होने से बाज़ न आएँ, जिस तरह बाज़ की आदत बन गई है। इसके बजाए हम एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करें, ख़ासकर यह बात मदे-नज़र रखकर कि ख़ुदावंद का दिन क़रीब आ रहा है।

अपने पड़ोसी का ख़याल रखना हमारा फ़र्ज़ है। हमें भलाई ही करनी है। हमें मिलकर एक दूसरे की हौसलाअफ़्ज़ाई करनी है, क्योंकि हमारा ईमान न सिर्फ़ इनफ़िरादी है बल्कि उसकी इजतमाई शक्ल भी है। लाज़िम है कि ईमानदार जमात की सूरत में ईसा अल-मसीह के नाम से अल्लाह की परस्तिश और इबादत करें। दुनिया के तमाम ईमानदार मिलकर ईसा अल-मसीह की उम्मत हैं। उम्मत के इब्तिदाई दिनों में ईसा अल-मसीह के पैरोकार मुख़्तलिफ़ घरों में दुआ और इबादत करने के लिए जमा होते थे।

मुतवातिर कलाम की हिदायत की ज़रूरत

अल्लाह की मरज़ी के मुताबिक़ पाक नविश्ते रूहुल-क़ुद्स के वसीले से इनसान पर नाज़िल होकर क़लमबंद हुए। ईसा अल-मसीह के पहले पैरोकार इस पर ज़ोर देते रहे कि बाक़ायदगी से मिलकर अल्लाह के कलाम की तिलावत करें और उससे हिदायात हासिल करें। तौरेत, यशुअ 1:7-9,

> लेकिन ख़बरदार, मज़बूत और बहुत दिलेर हो। एहतियात से उस पूरी शरीअत पर अमल कर जो मेरे ख़ादिम मूसा ने तुझे दी है। उससे न दाईं और न बाईं तरफ़ हटना। फिर जहाँ कहीं भी तू जाए कामयाब होगा। जो बातें इस शरीअत की किताब में लिखी हैं वह तेरे मुँह से न हटें। दिन-रात उन पर ग़ौर करता रह ताकि तू एहतियात से इसकी हर बात पर अमल कर सके। फिर तू हर काम में कामयाब और ख़ुशहाल होगा। मैं फिर कहता हूँ कि मज़बूत और दिलेर हो। न घबरा और न हौसला हार, क्योंकि जहाँ भी तू जाएगा वहाँ रब तेरा ख़ुदा तेरे साथ रहेगा।

इन आयात में सब्र सिखाया जाता है। ख़ातिरजमा रखकर हमें अल्लाह का पूरा कलाम सीखने की ज़रूरत है जिस तरह कलीमुल्लाह ने हमें सिखाया। चाहिए कि हम दिन-रात तू उसे हिफ़्ज़ करके जज़्ब कर लें।

पाक कलाम के मुतालए के बारे में दर्जे-ज़ैल के चार नुकते अहमियत रखते हैं।

- अल्लाह के कलाम पर ग़ौरो-ख़ौज़ करके उसे हिफ़्ज़ भी करो।
- उसकी आयात की तालीम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारो।
- दिन-रात उन पर ग़ौरो-फ़िकर करो।
- शक की गुंजाइश ही नहीं क्योंकि यह सहायफ़ अल्लाह की तरफ़ से हैं।

इंजीले-मुक़द्दस, 2 तीमुथियुस 3:14-17,

> लेकिन आप ख़ुद उस पर क़ायम रहें जो आपने सीख लिया और जिस पर आपको यक़ीन आया है। क्योंकि आप अपने उस्तादों को जानते हैं और आप बचपन से मुक़द्दस सहीफ़ों से वाक़िफ़ हैं। अल्लाह का यह कलाम आपको वह हिकमत अता कर सकता है जो मसीह ईसा पर ईमान लाने से नजात तक पहुँचाती है। क्योंकि हर पाक नविश्ता अल्लाह के रूह से वुजूद में आया है और तालीम देने, मलामत करने, इसलाह करने और रास्तबाज़ ज़िंदगी गुज़ारने की तरबियत देने

> के लिए मुफ़ीद है। कलामे-मुक़द्दस का मक़सद यही है कि अल्लाह का बंदा हर लिहाज़ से क़ाबिल और हर नेक काम के लिए तैयार हो।

यह हवाला हमें नसीहत करता है कि बाक़ायदगी से अल्लाह का कलाम पढ़ो ताकि उसकी हर सच्चाई से वाक़िफ़ हो जाओ। पाक कलाम हमें ईसा अल-मसीह में ज़िंदगी गुज़ारने के तौर-तरीक़े सिखाता है। यह नविश्ते पूरी की पूरी तरह से इलाही हैं। उसमें वह हिदायात हैं जिनसे हम वह ज़िंदगी गुज़ार सकते हैं जो अल्लाह को पसंद हो। पाक कलाम पढ़कर हम सिराते-मुस्तक़ीम पहचान पाएँगे। इंजील तीन बातों की तसदीक़ करती है :

- किताबे-मुक़द्दस तौरेत, ज़बूर और इंजीले-मुक़द्दस पर मुश्तमिल है।
- किताबे-मुक़द्दस हमें अल्लाह के बारे में सिखाकर हर एक को जन्नत की राह दिखाता है।
- किताबे-मुक़द्दस के नविश्ते इलाही इल्हाम से क़लमबंद हुए हैं, उसमें ग़लती की गुंजाइश ही नहीं। इंजीले-मुक़द्दस, लूक़ा 21:33,

> आसमानो-ज़मीन तो जाते रहेंगे, लेकिन मेरी बातें हमेशा तक क़ायम रहेंगी।

इंजीले-मुक़द्दस, 1 पतरस 1:24-25,

> यों कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “तमाम इनसान घास ही हैं, उनकी तमाम शानो-शौकत जंगली फूल की मानिंद है। घास तो मुरझा जाती और फूल गिर जाता है, लेकिन रब का कलाम अबद तक क़ायम रहता है।” मज़कूरा कलाम अल्लाह की ख़ुशख़बरी है जो आपको सुनाई गई है।

पाक नविश्तों के मुताबिक़ इनसान की ज़िंदगी चंद रोज़ की है, क्योंकि वह घास और फूल की तरह सूख जाती है। लेकिन अल्लाह का कलाम अबदी है। लिहाज़ा किताबे-मुक़द्दस के नविश्ते सौ फ़ीसद अल्लाह का कलाम हैं जो न तबदील हुए हैं, न तबदील होने के हैं।

दुआ, रोज़ा और ग़रीबों का ख़याल रखना

इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 6:1-18,

> ख़बरदार! अपने नेक काम लोगों के सामने दिखावे के लिए न करो, वरना तुमको अपने आसमानी बाप से कोई अज्र नहीं मिलेगा।
>
> चुनाँचे ख़ैरात देते वक़्त रियाकारों की तरह न कर जो इबादतख़ानों और गलियों में बिगुल बजाकर इसका एलान करते हैं ताकि लोग उनकी इज़्ज़त करें। मैं तुमको

सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। इसके बजाए जब तू ख़ैरात दे तो तेरे दाएँ हाथ को पता न चले कि बायाँ हाथ क्या कर रहा है। तेरी ख़ैरात यों पोशीदगी में दी जाए तो तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

दुआ करते वक़्त रियाकारों की तरह न करना जो इबादतख़ानों और चौकों में जाकर दुआ करना पसंद करते हैं, जहाँ सब उन्हें देख सकें। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। इसके बजाए जब तू दुआ करता है तो अंदर के कमरे में जाकर दरवाज़ा बंद कर और फिर अपने बाप से दुआ कर जो पोशीदगी में है। फिर तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

दुआ करते वक़्त ग़ैरयहूदियों की तरह तवील और बेमानी बातें न दोहराते रहो। वह समझते हैं कि हमारी बहुत-सी बातों के सबब से हमारी सुनी जाएगी। उनकी मानिंद न बनो, क्योंकि तुम्हारा बाप पहले से तुम्हारी ज़रूरियात से वाक़िफ़ है, बल्कि यों दुआ किया करो, ऐ हमारे आसमानी बाप, तेरा नाम मुक़द्दस माना जाए। तेरी बादशाही आए। तेरी मरज़ी जिस तरह आसमान में पूरी होती है ज़मीन पर भी पूरी हो। हमारी रोज़ की

> रोटी आज हमें दे। हमारे गुनाहों को माफ़ कर जिस तरह हमने उन्हें माफ़ किया जिन्होंने हमारा गुनाह किया है। और हमें आज़माइश में न पड़ने दे बल्कि हमें इबलीस से बचाए रख। क्योंकि बादशाही, क़ुदरत और जलाल अबद तक तेरे ही हैं।

> क्योंकि जब तुम लोगों के गुनाह माफ़ करोगे तो तुम्हारा आसमानी बाप भी तुमको माफ़ करेगा। लेकिन अगर तुम उन्हें माफ़ न करो तो तुम्हारा बाप भी तुम्हारे गुनाह माफ़ नहीं करेगा।
>
> रोज़ा रखते वक़्त रियाकारों की तरह मुँह लटकाए न फिरो, क्योंकि वह ऐसा रूप भरते हैं ताकि लोगों को मालूम हो जाए कि वह रोज़ा से हैं। मैं तुमको सच बताता हूँ, जितना अज्र उन्हें मिलना था उन्हें मिल चुका है। ऐसा मत करना बल्कि रोज़ा के वक़्त अपने बालों में तेल डाल और अपना मुँह धो। फिर लोगों को मालूम नहीं होगा कि तू रोज़ा से है बल्कि सिर्फ़ तेरे बाप को जो पोशीदगी में है। और तेरा बाप जो पोशीदा बातें देखता है तुझे इसका मुआवज़ा देगा।

इंजीले-मुक़द्दस फ़रमाती है कि ईमानदार दूसरों से इज़्ज़त हासिल करने के मक़सद से न दुआ करें, न रोज़ा रखें और न ही ख़ैरात दें। दुआ, रोज़ा और ख़ैरात ऐसे काम हैं जो ख़ुलूसदिली से करने हैं, जो हम दूसरों

की इज़्ज़त हासिल करने के वास्ते न करें बल्कि इस इरादे से कि वह अल्लाह को पसंद आएँ।

दुआ आपकी रूहानी सेहत की कुंजी है। रोज़ाना दुआ करके अल्लाह के हुज़ूर वक़्त गुज़ारें। दुआ के बग़ैर आप कुछ करने नहीं पाएँगे। अल्लाह के हुज़ूर दुआ में वक़्त लगाकर आपका ईमान मज़बूत हो जाएगा और आप ईसा अल-मसीह का नाम लेकर अल्लाह से हर बात माँगना सीखेंगे। दुआ करने से आप ईसा अल-मसीह के हुज़ूर वक़्त गुज़ारेंगे तो वह अपनी मरज़ी और मुहब्बत आप पर ज़ाहिर करेंगे।

रोज़ाना मुतअद्दद दफ़ा दुआ करें। आपका दिल हमेशा अल्लाह की राहनुमाई के लिए तैयार रहे ताकि ज्योंही वह आपसे हमकलाम हो आप उसकी आवाज़ पहचानें। दुआ का मतलब यह है कि दिन-भर हमारा अल्लाह से गहरा ताल्लुक़ है। दुआ करते वक़्त हम ईसा अल-मसीह के नाम से अल्लाह से बात करते हैं।

तौरेत और इंजील में उन लोगों का ज़िक्र आता है जिन्होंने दिन-रात रोज़ा रखा है। कुछ ने खाने से और कुछ ने पीने से परहेज़ किया। कुछ ने दोनों से परहेज़ किया। रोज़े के ख़ास दिन मुक़र्रर नहीं थे।

बात यह है कि रोज़ा का मक़सद ईसा अल-मसीह के साथ वाबस्ता होना है। रोज़ा रखनेवाला अल्लाह को बेहतर जानना चाहता है। अल्लाह

का कलाम हमें कोई हुक्म नहीं देता कि रोज़ा कब रखना चाहिए। हर कोई रोज़ा तब रखे जब वह ज़रूरत महसूस करे।

अशाए-रब्बानी—अल-मसीह की याद में खाना

इब्तिदाई ईमानदार रोज़ बरोज़ मिलकर इबादत करते थे। वह अल्लाह का कलाम पढ़ते और अल-मसीह की याद में खाना खाते थे। इसी तरह हम भी मिलकर दुआ और इबादत करके ईसा अल-मसीह की याद में एक मख़सूस खाना खाते हैं। इंजीले-मुक़द्दस, 1 कुरिंथियों 11:23-29,

> क्योंकि जो कुछ मैंने आपके सुपुर्द किया है वह मुझे ख़ुदावंद ही से मिला है। जिस रात ख़ुदावंद ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया गया उसने रोटी लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके कहा, "यह मेरा बदन है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।" इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला लेकर कहा, "मै का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे ख़ून के ज़रीए क़ायम किया जाता है। जब कभी इसे पियो तो मुझे याद करने के लिए पियो।" क्योंकि जब भी आप यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो ख़ुदावंद की मौत का एलान करते हैं, जब तक वह वापस न आए। चुनाँचे जो नालायक़ तौर पर ख़ुदावंद की रोटी खाए और उसका प्याला पिए वह

> ख़ुदावंद के बदन और ख़ून का गुनाह करता है और क़ुसूरवार ठहरेगा। हर शख़्स अपने आपको परखकर ही इस रोटी में से खाए और प्याले में से पिए। जो रोटी खाते और प्याला पीते वक़्त ख़ुदावंद के बदन का एहतराम नहीं करता वह अपने आप पर अल्लाह की अदालत लाता है।

दर्जे-बाला हवाले में जमात को फ़रमाया गया है कि जो ईमान न लाया हो उसे इस खाने में शरीक होने की इजाज़त नहीं। यह भी लिखा है कि शरीक होने से पहले हर एक अपने दिल को परखे। अगर ईमानदार की किसी से दुश्मनी या झगड़ा हो तो वह पहले सुलह कराए।

इस रिफ़ाक़ती खाने के लिए जमा होने से पहले ईमानदार रोटी और प्याले की तैयारी करें। जमात के इब्तिदाई दिनों में प्याला अंगूर के रस से भर दिया जाता था। अगर अंगूर या किशमिश न हो तो कोई और पीनेवाली चीज़ इस्तेमाल कर सकते हैं जिससे ईसा का वह बहाया हुआ ख़ून याद आए जो हमारे गुनाहों के लिए दिया गया। इसके अलावा अगर रोटी न हो तो किसी और खानेवाली चीज़ से ईसा अल-मसीह का बदन याद किया जा सकता है।

जमा होते वक़्त हर एक अपना दिल जाँचकर ख़ुदावंद की तमजीद करे और रोटी का एक टुकड़ा लेकर खाए, फिर अगले को बाक़ी रोटी देकर कहे कि

> यह ईसा अल-मसीह का बदन है जो आपके गुनाहों की माफ़ी की ख़ातिर तोड़ा गया।

जब सबने एक एक टुकड़ा ले लिया हो तो कोई प्याला लेकर ख़ुदावंद का शुक्र करे और यह कहकर आगे दे कि

> यह ईसा अल-मसीह का ख़ून है जो आपके गुनाहों की माफ़ी की ख़ातिर बहाया गया। यह उस नए अहद का निशान है जो ईसा और आपके दरमियान क़ायम हुआ है। उसे याद करने के लिए यही किया करो।

यह रस्म अदा करने के बाद सब ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह की हम्द करें जिन्होंने मसलूब होकर हमारे गुनाहों की माफ़ी का बंदोबस्त क़ायम किया। उनकी हम्द करें, क्योंकि वह तीसरे दिन जी उठे और आज भी ज़िंदा हैं। उनकी परस्तिश करें, क्योंकि उनके अज़ीम काम से हम गुनाह से पाक-साफ़ होकर जहन्नुम से छुड़ाए गए हैं। उनकी तमजीद करें कि हम अबद तक जन्नत में अपने ख़ुदावंद के हुज़ूर जीते रहेंगे।

दसवाँ हिस्सा और ग़रीबों की मदद

तौरेत, अहबार 27:30,32,

> हर फ़सल का दसवाँ हिस्सा रब का है, चाहे वह अनाज हो या फल। वह रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है। इसी तरह गाय-बैलों और भेड़-बकरियों का दसवाँ हिस्सा भी रब के लिए मख़सूसो-मुक़द्दस है, हर दसवाँ जानवर जो गल्लाबान के डंडे के नीचे से गुज़रेगा।

ज़मीन की पैदावार, दरख़्त का फल और जानवरों का दसवाँ हिस्सा अल्लाह का है। पैसे का भी दसवाँ हिस्सा ख़ुदावंद का है। अगर कोई 100 रुपए कमाए तो उनमें से 10 रुपए ख़ुदावंद के हैं। अगर कोई 10,000 रुपए कमाए तो उनमें से एक हज़ार ख़ुदावंद के हैं। यह दसवाँ हिस्सा जमात के सुपुर्द किया जाए जो इसे सलतनते-इलाही को बढ़ाने के लिए सर्फ़ करे। मसलन वह इसे तबलीग़ी किताबों या दौरों के लिए ख़र्च करे ताकि ख़ुशख़बरी उन लोगों तक पहुँचे जिन्हें अब तक मौक़ा नहीं मिला। इसके अलावा इन पैसों से ग़रीबों की मदद की जाए।

तमाम शानो-शौकत अल्लाह की है, क्योंकि जो भी आसमान और ज़मीन में है उसी का है। तमाम दौलत, ख़ूबसूरती, इज़्ज़त, ताक़त और बरकत उसी की है। हम तहे-दिल से ख़ुदावंद की तमजीद करते हैं, क्योंकि उसी ने हमें ज़िंदगी बख़्शी है। ऐ अल्लाह, हम और हमारी तमाम मिलकियत तेरी ही है, क्योंकि यह सब कुछ तेरी तरफ़ से है,

बल्कि यह दसवाँ हिस्सा पहले ही से तेरा ही है। जो अपनी दौलत छोड़ नहीं सकता, वह ख़ुदावंद का शागिर्द नहीं हो सकता। इससे मालूम होता है कि हमें कम-अज़-कम अपना दसवाँ हिस्सा देना चाहिए। जो ईसा अल-मसीह का है, उसे जानना चाहिए कि उसकी हर चीज़ यानी सौ फ़ीसद ख़ुदावंद की तरफ़ से है। अल्लाह ने दसवाँ हिस्सा देने को कहा, लेकिन हक़ीक़त में सब कुछ उसी का है।

अल्लाह चाहता है कि जो पैसे उसने अपने लोगों के हवाले किया हो, वह दर्जे-ज़ैल कामों के लिए सर्फ़ किए जाएँ,

- अपने ख़ानदान की ख़ुराक, कपड़े और दीगर ज़रूरियात के लिए।
- ग़रीबों की मदद के लिए।
- उसकी ख़िदमत करनेवालों के लिए। मसलन उन हज़रात के लिए जो किताबे-मुक़द्दस और दीगर कामों से इलाही सलतनत को बढ़ाने के कोशाँ रहते हैं।

आओ, न हम इन पैसों से अपने ख़ुदग़रज़ मक़ासिद पूरे करें, न इनसे अपनी इज़्ज़त बढ़ाने की कोशिश करें बल्कि हम इनसे अल्लाह तआला की ताज़ीम करें।

10

ईसा अल-मसीह की ज़ात

इंजीले-मुक़द्दस, इबरानियों 1:1-3,

> माज़ी में अल्लाह मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर और कई तरीक़ों से हमारे बापदादा से हमकलाम हुआ। उस वक़्त उसने यह नबियों के वसीले से किया लेकिन इन आख़िरी दिनों में वह अपने फ़रज़ंद के वसीले से हमसे हमकलाम हुआ, उसी के वसीले से जिसे उसने सब चीज़ों का वारिस बना दिया और जिसके वसीले से उसने कायनात को भी ख़लक़ किया। फ़रज़ंद अल्लाह का शानदार जलाल मुनअकिस करता और उसकी ज़ात की ऐन शबीह है। वह अपने क़वी कलाम से सब कुछ सँभाले

> रखता है। जब वह दुनिया में था तो उसने हमारे लिए गुनाहों से पाक-साफ़ हो जाने का इंतज़ाम क़ायम किया। इसके बाद वह आसमान पर क़ादिरे-मुतलक़ के दहने हाथ जा बैठा।

माज़ी में अल्लाह की हिदायात नबियों के वसीले से दुनिया में नाज़िल हुईं। लेकिन इन आख़िरी दिनों में अल्लाह अपने फ़रज़ंद के वसीले से हमसे हमकलाम हुआ है, उसी के वसीले से जिसे उसने तमाम चीज़ों का वारिस मुक़र्रर किया था। इंजीले-मुक़द्दस फ़रमाती है कि गो अल्लाह ने नबियों के वसीले से अपने आपको इनसान पर ज़ाहिर किया था ताहम यह नाकाफ़ी था, क्योंकि तमाम नबियों से कोई न कोई गुनाह सरज़द हुआ था। लेकिन अब अल्लाह अपने फ़रज़ंद के वसीले से ज़ाहिर हुआ है, उन्हीं के वसीले से जो अल्लाह की ज़ात के ऐन मुशाबेह हैं और जिनसे कभी भी गुनाह सरज़द नहीं हुआ है। इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 1:1-3,14,18,

> इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ था और कलाम अल्लाह था। यही इब्तिदा में अल्लाह के साथ था। सब कुछ कलाम के वसीले से पैदा हुआ। मख़लूक़ात की एक भी चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई।
>
> कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइशपज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह

> फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद का-सा था।
>
> किसी ने कभी भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन इकलौता फ़रज़ंद जो अल्लाह की गोद में है उसी ने अल्लाह को हम पर ज़ाहिर किया है।

हज़रत यूहन्ना रसूल फ़रमाते हैं कि ईसा अल-मसीह तमाम उन नबियों से बड़े हैं जो उनसे पहले आए थे, क्योंकि वह ख़ुद अल्लाह का कलाम हैं और उनके वसीले से कायनात ख़लक़ हुई। गो किसी ने अल्लाह को नहीं देखा लेकिन अल्लाह के फ़रज़ंद, ईसा अल-मसीह के वसीले से अल्लाह इनसान पर ज़ाहिर हुआ है। इस दुनिया की तख़लीक़ से पहले अल्लाह का कलाम था। इंजील फ़रमाती है कि अल्लाह का कलाम अल्लाह ख़ुद है, नीज़ कि अल्लाह का कलाम ईसा अल-मसीह की ज़ात में ज़ाहिर हुआ है। इंजीले-मुक़द्दस, 1 तीमुथियुस 3:16,

> यक़ीनन हमारे ईमान का भेद अज़ीम है।
> वह जिस्म में ज़ाहिर हुआ,
> रूह में रास्तबाज़ ठहरा
> और फ़रिश्तों को दिखाई दिया।
> उसकी ग़ैरयहूदियों में मुनादी की गई,
> उस पर दुनिया में ईमान लाया गया
> और उसे आसमान के जलाल में उठा लिया गया।

ईसा अल-मसीह में अल्लाह हमारे दरमियान ज़ाहिर हुआ, और हर ज़बान, क़ौम और क़बीले में उसके ईमानदार होंगे। लेकिन गो ईसा अल-मसीह का यह जलाल था तो भी उन्होंने अपने आपको पस्त कर दिया। इंजीले-मुक़द्दस, फ़िलिप्पियों 2:5-11,

> वही सोच रखें जो मसीह ईसा की भी थी। वह जो अल्लाह की सूरत पर था नहीं समझता था कि मेरा अल्लाह के बराबर होना कोई ऐसी चीज़ है जिसके साथ ज़बरदस्ती चिमटे रहने की ज़रूरत है। नहीं, उसने अपने आपको इससे महरूम करके ग़ुलाम की सूरत अपनाई और इनसानों की मानिंद बन गया। शक्लो-सूरत में वह इनसान पाया गया। उसने अपने आपको पस्त कर दिया और मौत तक ताबे रहा, बल्कि सलीबी मौत तक। इसलिए अल्लाह ने उसे सबसे आला मक़ाम पर सरफ़राज़ कर दिया और उसे वह नाम बख़्शा जो हर नाम से आला है, ताकि ईसा के इस नाम के सामने हर घुटना झुके, ख़ाह वह घुटना आसमान पर, ज़मीन पर या इसके नीचे हो, और हर ज़बान तसलीम करे कि ईसा मसीह ख़ुदावंद है। यों ख़ुदा बाप को जलाल दिया जाएगा।

इसका मतलब है कि हम सबको ईसा अल-मसीह की मानिंद होना चाहिए, उन्हीं की मानिंद जिनकी तरफ़ से हमें नजात हासिल हुई है।

आप अल्लाह के बराबर थे, लेकिन आप अपने आपको इस ओहदे से महरूम करके ग़ुलाम की सूरत में इनसान बन गए। आप मौत तक फ़रमाँबरदार रहे, क्योंकि आपको मालूम था कि दुनिया के गुनाहों को उठा ले जाना है। इसलिए अल्लाह ने आपको ज़िंदा करके तमाम नामों से अज़ीम नाम बख़्श दिया ताकि पूरी कायनात को मालूम हो कि ईसा अल-मसीह ख़ुदावंद हैं और अल्लाह क़ादिरे-मुतलक़ बाप को जलाल हासिल हो।

इंजील फ़रमाती है कि ईसा अल-मसीह इनसान भी थे और अल्लाह का कलाम भी। इसका मतलब है कि ईसा अल-मसीह की दो ज़ातें हैं।

> ईसा अल-मसीह की इनसानी ज़ात भी है और इलाही ज़ात भी।

आपकी इनसानी ज़ात

इंजीले-मुक़द्दस, लूक़ा 1:35 में जिबराईल फ़रिश्ता मरियम से मुख़ातिब होकर अल-मसीह की पैदाइश के बारे में फ़रमाता है कि

> रूहुल-क़ुद्स तुझ पर नाज़िल होगा, अल्लाह तआला की क़ुदरत का साया तुझ पर छा जाएगा। इसलिए यह बच्चा क़ुद्दूस होगा और अल्लाह का फ़रज़ंद कहलाएगा।

ईसा अल-मसीह की इनसानी ज़ात है। इसका मतलब है कि वह इनसान बनकर इस दुनिया में नाज़िल हुए। अल्लाह के फ़रमान पर रूहुल-क़ुद्स मरियम पर नाज़िल हुआ और ईसा अल-मसीह इनसान बन गए। ईसा अल-मसीह ज़िंदगी-भर बेगुनाह थे, वह पाक और मुक़द्दस थे। आपकी पैदाइश, ज़िंदगी, मौत, जी उठना, आसमान पर उठा लिया जाना—यह पूरा सिलसिला पाक और कामिल था, और आप में कोई भी बदी नहीं थी। इनसान होने के नाते से आप मरियम के बेटे थे, लेकिन आप बेगुनाह, कामिल और ख़ालिस थे।

आपकी इलाही ज़ात

ईसा अल-मसीह की इलाही ज़ात भी है। इससे मुराद यह है कि आप अल्लाह का कलाम बल्कि अल्लाह ख़ुद हैं। इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना में लिखा है कि आप अल्लाह का कलाम हैं। आपकी अज़ल से इलाही ज़ात है जबकि आपने दुनिया में नाज़िल होकर इनसानी ज़ात अपना ली। यह एक इलाही भेद है। आपकी इलाही ज़ात दायमी है, क्योंकि आप अल्लाह का कलाम बल्कि अल्लाह ख़ुद हैं। दीगर अलफ़ाज़ में आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं। ईसा अल-मसीह ने फ़रमाया कि जिसने मुझे देखा है, उसने बाप को देखा है, क्योंकि मैं और बाप एक हैं।

इनसानी और इलाही ज़ात होने की ज़रूरत

लाज़िम था कि ईसा अल-मसीह की इनसानी ज़ात भी हो और इलाही ज़ात भी। यह एक भेद है जिसकी विज़ाहत अल्लाह ने अपने कलाम में की है। ईसा अल-मसीह इनसान तो बन गए, लेकिन वह गुनाह से पाक-साफ़ रहे। आपने इसलिए इनसानी ज़ात अपनाई कि अपनी जान को इनसान की ख़ातिर दें। इनसान अपने गुनाहों के बाइस सज़ाए-मौत के लायक़ है, और वह सिर्फ़ उसी पाक ज़ात के वसीले से माफ़ी पा सकता है जो कामिल इनसान होने के बाइस सज़ाए-मौत के लायक़ नहीं थे। उस पाक ज़ात ने इनसानी ज़ात अपनाई ताकि अपने ऊपर इनसानों के गुनाह उठा ले जाए।

लिखा है कि अल्लाह ही गुनाहों की माफ़ी बख़्श देता है। कोई और मख़लूक़ माफ़ी नहीं दे सकता। चूँकि ईसा अल-मसीह की ज़ाते-इलाही भी है इसलिए आपको गुनाह माफ़ करने का इख़्तियार हासिल है। अगर आपकी ज़ाते-इलाही न होती, तो आप हमारे गुनाहों को कैसे माफ़ फ़रमाते?

> यह एक भेद है कि ईसा अल-मसीह सौ फ़ीसद इनसान भी हैं और सौ फ़ीसद इलाही भी। इस वाहिद वसीले से आपने अल्लाह का इनसाफ़ और अल्लाह की मुहब्बत का तक़ाज़ा पूरा किया।

अल्लाह का इनसाफ़ फ़रमाता है कि गुनाह की सज़ा मौत है जबकि अल्लाह की मुहब्बत हमें इस सज़ा से बचाना चाहती है। लिहाज़ा ईसा अल-मसीह अल्लाह की कामिल मुहब्बत का इज़हार है, क्योंकि ईसा अल-मसीह ने हमारी जगह मौत की सज़ा अपने ऊपर उठाकर इनसाफ़ का तक़ाज़ा पूरा किया। लाज़िम था कि वह इनसान हों ताकि हमारी जगह अपनी जान दे सकें। लेकिन यह भी लाज़िम था कि वह इलाही हों ताकि हमें बचाकर अल्लाह के फ़रज़ंद बना सकें। अगर वह सिर्फ़ इनसान होते तो उनमें हमें बचाने की क़ुव्वत न होती। इंजीले-मुक़द्दस, रोमियों 1:3-4,

> और यह पैग़ाम उसके फ़रज़ंद ईसा के बारे में है। इनसानी लिहाज़ से वह दाऊद की नसल से पैदा हुआ, जबकि रूहुल-क़ुद्स के लिहाज़ से वह क़ुदरत के साथ अल्लाह का फ़रज़ंद ठहरा जब वह मुरदों में से जी उठा। यह है हमारे ख़ुदावंद ईसा मसीह के बारे में अल्लाह की ख़ुशख़बरी।

इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 10:30,

> मैं और बाप एक हैं।

तसलीस : बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स

तसलीस एक भेद है। इस नाम से हम ज़ाहिर करते हैं कि हम उस एक ख़ुदा पर ईमान रखते हैं जो तीन अक़ानीम यानी बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स में हम पर ज़ाहिर हुआ है। अल्लाह रूह भी है और एक भी है, लेकिन वह हम पर बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स की सूरत में ज़ाहिर हुआ है। इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 4:24,

> अल्लाह रूह है, इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चाई से उसकी परस्तिश करें।

लिहाज़ा रूहुल-क़ुद्स ज़िंदा ख़ुदा है। हम जानते हैं कि अल्लाह एक है और कि वह किसी और को अपनी शान और जलाल में शरीक नहीं करता। लेकिन अल्लाह तीन मुख़्तलिफ़ अक़ानीम में हम पर ज़ाहिर हुआ है। इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 28:18-20,

> फिर ईसा ने उनके पास आकर कहा, “आसमान और ज़मीन का कुल इख़्तियार मुझे दे दिया गया है। इसलिए जाओ, तमाम क़ौमों को शागिर्द बनाकर उन्हें बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें यह सिखाओ कि वह उन तमाम अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारें जो मैंने तुम्हें दिए हैं। और देखो, मैं दुनिया के इख़्तिताम तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।”

हम पढ़ चुके हैं कि बपतिस्मा या पाक ग़ुस्ल ईसा अल-मसीह की पैरवी करने का एलान है। बपतिस्मा बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के नाम से किया जाता है। यहाँ हम देखते हैं कि बपतिस्मा एक ही नाम से दिया जाता है, लेकिन इस एक नाम में बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स शामिल हैं, वह कुछ जो तसलीस कहलाता है। इंजीले-मुक़द्दस, 2 कुरिंथियों 13:13,

> ख़ुदावंद ईसा मसीह का फ़ज़ल, अल्लाह की मुहब्बत और रूहुल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त आप सबके साथ होती रहे।

इसका मतलब है कि ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह के फ़ज़ल और अल्लाह की मुहब्बत और रूहुल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त से बरकत हासिल होती है। यानी इस एक ख़ुदा की बरकत में फ़रज़ंद का फ़ज़ल, बाप की मुहब्बत और रूहुल-क़ुद्स की रिफ़ाक़त शामिल हैं।

11

ममनू चीज़ें

अब आइए हम उन चीज़ों पर ग़ौर करें जो इंजील के मुताबिक़ मना हैं।

- बुतपरस्ती
- क़त्ल
- ज़िना
- तलाक़
- माँ-बाप की बेइज़्ज़ती
- चोरी
- झूठ
- मुनश्शियात
- जादूगरी
- किसी से भी नफ़रत
- सुस्ती
- क़र्ज़

इंजील में फ़रायज़ भी दर्ज हैं और ममनू चीज़ें भी। दर्जे-बाला चीज़ें मना हैं।

बुतपरस्ती

तौरेत, ख़ुरूज 20:3-6,

> मेरे सिवा किसी और माबूद की परस्तिश न करना। अपने लिए बुत न बनाना। किसी भी चीज़ की मूरत न बनाना, चाहे वह आसमान में, ज़मीन पर या समुंदर में हो। न बुतों की परस्तिश, न उनकी ख़िदमत करना, क्योंकि मैं तेरा रब ग़यूर ख़ुदा हूँ। जो मुझसे नफ़रत करते हैं उन्हें मैं तीसरी और चौथी पुश्त तक सज़ा दूँगा। लेकिन जो मुझसे मुहब्बत रखते और मेरे अहकाम पूरे करते हैं उन पर मैं हज़ार पुश्तों तक मेहरबानी करूँगा।

ज़िंदा अल्लाह के सिवा किसी और देवता की पूजा मत करना। मिसाल के तौर पर, इंजीले-मुक़द्दस में क़लमबंद है कि लालच बुतपरस्ती के बराबर है। इसका मतलब है कि जो पैसे या दौलत का लालच करके इसके पीछे भागता रहे वह उन चीज़ों को बुत बनाकर बुतपरस्त साबित हुआ है।

इस के अलावा लाज़िम है कि लोग जिंसी और जिस्मानी गुनाहों से दूर रहें। वह गंदी फ़िल्मों तक न देखें। मुख़्तलिफ़ क़िस्म के तावीज़, क़िस्मत

का हाल बतानेवाली चीज़ें और बदरूहों से बचानेवाली चीज़ें भी बुत हैं। यह सब बुत ही हैं क्योंकि अल्लाह ख़ुद हमारी हिफ़ाज़त करता है, और वह नहीं चाहता कि हम ऐसी चीज़ों पर एतबार करें। अल्लाह इन सारी चीज़ों से कहीं क़वी है! इंजीले-मुक़द्दस, कुलुस्सियों 2:13-15,

> पहले आप अपने गुनाहों और ना-मख़तून जिस्मानी हालत के सबब से मुरदा थे, लेकिन अब अल्लाह ने आपको मसीह के साथ ज़िंदा कर दिया है। उसने हमारे तमाम गुनाहों को माफ़ कर दिया है। हमारे क़र्ज़ की जो रसीद अपनी शरायत की बिना पर हमारे ख़िलाफ़ थी उसे उसने मनसूख़ कर दिया। हाँ, उसने हमसे दूर करके उसे कीलों से सलीब पर जड़ दिया। उसने हुक्मरानों और इख़्तियारवालों से उनका असला छीनकर सबके सामने उनकी रुसवाई की। हाँ, मसीह की सलीबी मौत से वह अल्लाह के क़ैदी बन गए और उन्हें फ़तह के जुलूस में उसके पीछे पीछे चलना पड़ा।

ईसा अल-मसीह ने सलीब पर शैतान को शिकस्त दी, इसलिए ईमानदारों को इबलीस से डरने की ज़रूरत नहीं रही। जब ईमानदार पूरे दिलो-जान से ईसा अल-मसीह की पैरवी करते हैं तो वह उस के ख़ून में महफ़ूज़ रहते हैं, और शैतान का उन पर कुछ भी इख़्तियार नहीं रहा।

क़त्ल

तौरेत, ख़ुरूज 20:13,

> क़त्ल न करना।

ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) इस हुक्म को मज़ीद गहराई तक ले गए। इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 5:21-24,

> तुमने सुना है कि बापदादा को फ़रमाया गया, 'क़त्ल न करना। और जो क़त्ल करे उसे अदालत में जवाब देना होगा।' लेकिन मैं तुमको बताता हूँ कि जो भी अपने भाई पर ग़ुस्सा करे उसे अदालत में जवाब देना होगा। इसी तरह जो अपने भाई को 'अहमक़' कहे उसे यहूदी अदालते-आलिया में जवाब देना होगा। और जो उसको 'बेवुक़ूफ़!' कहे वह जहन्नुम की आग में फेंके जाने के लायक़ ठहरेगा। लिहाज़ा अगर तुझे बैतुल-मुक़द्दस में क़ुरबानी पेश करते वक़्त याद आए कि तेरे भाई को तुझसे कोई शिकायत है तो अपनी क़ुरबानी को वहीं क़ुरबानगाह के सामने ही छोड़कर अपने भाई के पास चला जा। पहले उससे सुलह कर और फिर वापस आकर अल्लाह को अपनी क़ुरबानी पेश कर।

लिहाज़ा हमें अपने अलफ़ाज़ पर ग़ौर करने की ज़रूरत है। चाहिए कि हम दूसरों के बारे में मनफ़ी बात ही न करें। हम ग़लतबयानी करने

के लिए नहीं बुलाए गए बल्कि बरकत देने के लिए। ग़लतबयानी करना क़त्ल के बराबर है।

ज़िना

हर जिंसी गुनाह से परहेज़ करना है। तौरेत, ख़ुरूज 20:14,

> ज़िना न करना।

इसके मुताल्लिक़ ईसा अल-मसीह ने इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 5:27-28 में फ़रमाया,

> तुमने यह हुक्म सुन लिया है कि 'ज़िना न करना।' लेकिन मैं तुम्हें बताता हूँ, जो किसी औरत को बुरी ख़ाहिश से देखता है वह अपने दिल में उसके साथ ज़िना कर चुका है।

इसका मतलब है कि किसी औरत को लालची नज़र से देखना मना है। यह हुक्म औरतों पर भी लागू है। इंजीले-मुक़द्दस, 1 कुरिंथियों 6:18-20,

> ज़िनाकारी से भागें! इनसान से सरज़द होनेवाला हर गुनाह उसके जिस्म से बाहर होता है सिवाए ज़िना के। ज़िनाकार तो अपने ही जिस्म का गुनाह करता है। क्या आप नहीं जानते कि आपका बदन रूहुल-क़ुद्स का घर है जो आपके अंदर सुकूनत करता है और जो आपको

> अल्लाह की तरफ़ से मिला है? आप अपने मालिक नहीं हैं क्योंकि आपको क़ीमत अदा करके ख़रीदा गया है। अब अपने बदन से अल्लाह को जलाल दें।

लिहाज़ा आपको हर उस चीज़ से दूर रहने की ज़रूरत है जिसका जिंसी गुनाह से ताल्लुक़ हो। आपका बदन रूहुल-क़ुद्स की सुकूनतगाह है। यह बात उन तमाम गुनाहों पर लागू है जो आपके जिस्म को नुक़सान पहुँचाते हैं, यानी तंबाकूनोशी, हद से पेटूपन, शराबख़ोरी वग़ैरा। यह सारी चीज़ें रूहुल-क़ुद्स की सुकूनतगाह को तबाह करती हैं।

तलाक़

जो आदमी या औरत ईसा अल-मसीह पर ईमान लाए उसे अपने शरीके-हयात से अलग रहने की इजाज़त नहीं। सिर्फ़ शरीके-हयात की वफ़ात पर दुबारा शादी करने की इजाज़त है। इंजीले-मुक़द्दस, मरक़ुस 10:6-9,11-12,

> लेकिन इब्तिदा में ऐसा नहीं था। दुनिया की तख़लीक़ के वक़्त अल्लाह ने उन्हें मर्द और औरत बनाया। 'इसलिए मर्द अपने माँ-बाप को छोड़कर अपनी बीवी के साथ पैवस्त हो जाता है। वह दोनों एक हो जाते हैं।' यों वह कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। तो जिसे अल्लाह ने ख़ुद जोड़ा है उसे

> इनसान जुदा न करे ... जो अपनी बीवी को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह उसके साथ ज़िना करता है। और जो औरत अपने ख़ावंद को तलाक़ देकर किसी और से शादी करे वह भी ज़िना करती है।

जब आदमी अपने वालिदैन को छोड़कर बीवी से पैवस्त हो जाता है तो वह दो नहीं रहते बल्कि एक हो जाते हैं। किसी को उस चीज़ को तोड़ना नहीं चाहिए जिसे अल्लाह ने जोड़ा है।

माँ-बाप की इज़्ज़त

तौरेत, ख़ुरूज 20:12,

> अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना। फिर तू उस मुल्क में जो रब तेरा ख़ुदा तुझे देनेवाला है देर तक जीता रहेगा।

इंजीले-मुक़द्दस, इफ़िसियों 6:1-3,

> बच्चो, ख़ुदावंद में अपने माँ-बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही रास्तबाज़ी का तक़ाज़ा है। कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, "अपने बाप और अपनी माँ की इज़्ज़त करना।" यह पहला हुक्म है जिसके साथ एक वादा भी किया गया है, "फिर तू ख़ुशहाल और ज़मीन पर देर तक जीता रहेगा।"

जब हम वालिदैन और बच्चों के ताल्लुक़ात पर ग़ौर करते हैं तो हमें दो बातों में इम्तियाज़ करने की ज़रूरत है—इज़्ज़त करने में और ताबेदारी करने में। अपने वालिदैन की इज़्ज़त करने का मतलब यह है कि हम उन्हें बुज़ुर्ग और तजरिबाकार समझें, मगर इसका यह मतलब नहीं कि हर सूरत में उनकी ताबेदारी करें।

पहली मिसाल : अगर बाप अपने बेटे को चोरी या क़त्ल करने पर मजबूर करने की कोशिश करे तो इस सूरत में ताबेदारी जायज़ नहीं। लाज़िम है कि बेटा इनकार करके कहे कि बेशक आप मुझे निहायत अज़ीज़ हैं, लेकिन इस हुक्म पर अमल करने से मैं अल्लाह के हुक्म की ख़िलाफ़वरज़ी करूँगा, लिहाज़ा मैं ऐसा नहीं कर सकता।

दूसरी मिसाल : फ़र्ज़ करें कि कोई लड़का या लड़की ईसा अल-मसीह की पैरवी करने का फ़ैसला करके अपनी ज़िंदगी उसके सुपुर्द करे। अगर उसके वालिदैन उसे रोकने की कोशिश करें तो लाज़िम है कि बच्चा इनकार करके कहे कि बेशक आप मुझे निहायत अज़ीज़ हैं, लेकिन अब ईसा अल-मसीह मेरे आक़ा हैं जिनसे मेरे गुनाह माफ़ हुए हैं और मुझे अबदी ज़िंदगी हासिल हुई है। मैं अल्लाह की यह नेमत अब छोड़ ही नहीं सकता।

चोरी

तौरेत, ख़ुरूज 20:15,17,

> चोरी न करना। अपने पड़ोसी के घर का लालच न करना। न उसकी बीवी का, न उसके नौकर का, न उसकी नौकरानी का, न उसके बैल और न उसके गधे का बल्कि उसकी किसी भी चीज़ का लालच न करना।

चोरी किस वक़्त शुरू होती है? उस वक़्त जब दिल में लालच पैदा होता है। लिहाज़ा लालच से गुरेज़ करने की ज़रूरत है ताकि चोरी करने की आज़माइश में न पड़ें।

झूठ

तौरेत, ख़ुरूज 20:16,

> अपने पड़ोसी के बारे में झूठी गवाही न देना।

इंजीले-मुक़द्दस, इफ़िसियों 4:25,

> इसलिए हर शख़्स झूठ से बाज़ रहकर दूसरों से सच बात करे, क्योंकि हम सब एक ही बदन के आज़ा हैं।

हक़ पर क़ायम रहें। ईमानदार को किसी के सामने शर्म महसूस करने या ख़ौफ़ खाने की ज़रूरत ही नहीं। इसके मुक़ाबले में वह अल्लाह का ख़ौफ़ माने जो हक़ है और जिससे झूठ छिपा नहीं रहता।

मुनश्शियात

इंजीले-मुक़द्दस, इफ़िसियों 5:18,

> शराब में मतवाले न हो जाएँ, क्योंकि इसका अंजाम ऐयाशी है। इसके बजाए रूहुल-क़ुद्स से मामूर होते जाएँ।

नशे में न आना। नशे में होते वक़्त इनसान सही तरह सोच नहीं सकता। हर ईमानदार को ख़ालिस ज़िंदगी गुज़ारना है। उसे रूहुल-क़ुद्स से मामूर होकर हर क़िस्म की बदमाशी से परहेज़ करना है।

जादूगरी

किताबे-मुक़द्दस हर क़िस्म का जादू मना करती है। यानी टोना, गंडा, जुआ, तावीज़, फ़ाल खोलना, नज़र लगवाना या नज़र उतरवाना, झाड़-फूँक और जादू की दीगर अक़साम। हर तरह की तवह्हुमपरस्ती किताबे-मुक़द्दस के मुताबिक़ जायज़ नहीं बल्कि लानती है। तौरेत, इस्तिसना 18:10-14,

> तेरे दरमियान कोई भी अपने बेटे या बेटी को क़ुरबानी के तौर पर न जलाए। न कोई ग़ैबदानी करे, न फ़ाल या शुगून निकाले या जादूगरी करे। इसी तरह मंत्र पढ़ना, हाज़िरात करना, क़िस्मत का हाल बताना या मुरदों की

> रूहों से राबता करना सख़्त मना है। जो भी ऐसा करे वह रब की नज़र में क़ाबिले-घिन है। इन्हीं मकरूह दस्तूरों की वजह से रब तेरा ख़ुदा तेरे आगे से उन क़ौमों को निकाल देगा। इसलिए लाज़िम है कि तू रब अपने ख़ुदा के सामने बेक़ुसूर रहे। जिन क़ौमों को तू निकालनेवाला है वह उनकी सुनती हैं जो फ़ाल निकालते और ग़ैबदानी करते हैं। लेकिन रब तेरे ख़ुदा ने तुझे ऐसा करने की इजाज़त नहीं दी।

जो भी क़िस्मत का हाल बताए, रूहों से बात करे, मुरदों से या ग़ैब की बदरूहों से ताल्लुक़ रखे, जो शैतानी निशान अपने पास रखे वह अल्लाह तआला की तौहीन करता है। अल्लाह तमाम जादूगरी से नफ़रत रखता है। तौरेत, यसायाह 8:19,

> लोग तुम्हें मशवरा देते हैं, "जाओ, मुरदों से राबता करनेवालों और क़िस्मत का हाल बतानेवालों से पता करो, उनसे जो बारीक आवाज़ें निकालते और बुड़बुड़ाते हुए जवाब देते हैं।" लेकिन उनसे कहो, "क्या मुनासिब नहीं कि क़ौम अपने ख़ुदा से मशवरा करे? हम ज़िंदों की ख़ातिर मुरदों से बात क्यों करें?"

लाज़िम है कि हम बराहे-रास्त अल्लाह से राहनुमाई दरियाफ़्त करें। रूहें या उनके बुलानेवालों से राबता रखना सरासर मना है। बेशक किसी

मरहूम की क़ब्र पर जाकर उसका अच्छा नमूना याद करने की इजाज़त है। लेकिन किसी मरहूम से कुछ माँगना या उसकी क़ुव्वत हासिल करने की कोशिश करना हरगिज़ मना है।

जब हम घर में लकड़ी से कोई चीज़ बनाएँ तो वह बुत नहीं है। लेकिन ज्योंही उस चीज़ की पूजा की जाए तो वह बुत बन गई है। अल्लाह बुतपरस्ती से नफ़रत रखता है, और इंजील के मुताबिक़ ईसा अल-मसीह ही को शफ़ा और हिफ़ाज़त देने का इख़्तियार हासिल है। वही हमें शैतानी रूहों से बचाए रखते हैं। जो ईसा अल-मसीह पर ईमान लाए वह शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़ रहता है। हम ईसा अल-मसीह में इसलिए महफ़ूज़ हैं कि आप सलीब पर तमाम शैतानी ताक़तों पर ग़ालिब आए।

हर ईमानदार को बदरूहें निकालने और बीमारों को शफ़ा देने का इख़्तियार हासिल है।

इंजीले-मुक़द्दस, मरक़ुस 16:16-18,

> जो भी ईमान लाकर बपतिस्मा ले उसे नजात मिलेगी। लेकिन जो ईमान न लाए उसे मुजरिम क़रार दिया जाएगा। और जहाँ जहाँ लोग ईमान रखेंगे वहाँ यह इलाही निशान ज़ाहिर होंगे : वह मेरे नाम से बदरूहें

> निकाल देंगे, नई नई ज़बानें बोलेंगे और साँपों को उठाकर महफ़ूज़ रहेंगे। मोहलक ज़हर पीने से उन्हें नुक़सान नहीं पहुँचेगा और जब वह अपने हाथ मरीज़ों पर रखेंगे तो शफ़ा पाएँगे।

चुनाँचे जाकर ईसा अल-मसीह की ख़ुशख़बरी सुनाएँ। ईसा अल-मसीह के नाम से बीमारों के लिए दुआ करें और बदरूहें निकालें। यह ख़ुशख़बरी आपके तमाम अज़ीज़ो-अक़ारिब, आपके गाँव, शहर बल्कि पूरी दुनिया को आज़ाद करना चाहती है।

किसी से भी नफ़रत

लाज़िम है कि ईमानदार न दीगर क़बीलों, न ही दीगर अक़वाम से नफ़रत करे। चूँकि अल्लाह हर क़ौम और ख़ानदान से मुहब्बत रखता है, इसलिए लाज़िम है कि हम सबसे बराबर मुहब्बत रखें। इंजीले-मुक़द्दस, लूक़ा 10:25-37,

> एक मौक़े पर शरीअत का एक आलिम ईसा को फँसाने की ख़ातिर खड़ा हुआ। उसने पूछा, “उस्ताद, मैं क्या क्या करने से मीरास में अबदी ज़िंदगी पा सकता हूँ?”
>
> ईसा ने उससे कहा, “शरीअत में क्या लिखा है? तू उसमें क्या पढ़ता है?”

आदमी ने जवाब दिया, "'रब अपने ख़ुदा से अपने पूरे दिल, अपनी पूरी जान, अपनी पूरी ताक़त और अपने पूरे ज़हन से प्यार करना।' और 'अपने पड़ोसी से वैसी मुहब्बत रखना जैसी तू अपने आपसे रखता है।'"

ईसा ने कहा, "तूने ठीक जवाब दिया। ऐसा ही कर तो ज़िंदा रहेगा।"

लेकिन आलिम ने अपने आपको दुरुस्त साबित करने की ग़रज़ से पूछा, "तो मेरा पड़ोसी कौन है?"

ईसा ने जवाब में कहा, "एक आदमी यरूशलम से यरीहू की तरफ़ जा रहा था कि वह डाकुओं के हाथों में पड़ गया। उन्होंने उसके कपड़े उतारकर उसे ख़ूब मारा और अध-मुआ छोड़कर चले गए। इत्तफ़ाक़ से एक इमाम भी उसी रास्ते पर यरीहू की तरफ़ चल रहा था। लेकिन जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो रास्ते की परली तरफ़ होकर आगे निकल गया। लावी क़बीले का एक ख़ादिम भी वहाँ से गुज़रा। लेकिन वह भी रास्ते की परली तरफ़ से आगे निकल गया। फिर सामरिया का एक मुसाफ़िर वहाँ से गुज़रा। जब उसने ज़ख़मी आदमी को देखा तो उसे उस पर तरस आया। वह उसके पास गया और उसके ज़ख़मों पर तेल

> और मै लगाकर उन पर पट्टियाँ बाँध दीं। फिर उसको अपने गधे पर बिठाकर सराय तक ले गया। वहाँ उसने उसकी मज़ीद देख-भाल की। अगले दिन उसने चाँदी के दो सिक्के निकालकर सराय के मालिक को दिए और कहा, 'इसकी देख-भाल करना। अगर ख़र्चा इससे बढ़कर हुआ तो मैं वापसी पर अदा कर दूँगा।'"
>
> फिर ईसा ने पूछा, "अब तेरा क्या ख़याल है, डाकुओं की ज़द में आनेवाले आदमी का पड़ोसी कौन था? इमाम, लावी या सामरी?"
>
> आलिम ने जवाब दिया, "वह जिसने उस पर रहम किया।"
>
> ईसा ने कहा, "बिलकुल ठीक। अब तू भी जाकर ऐसा ही कर।"

यहूदियों और सामरियों में बड़ी दुश्मनी थी। वह एक दूसरे से नफ़रत रखते थे। जब एक यहूदी ने हज़रत ईसा से मुहब्बत का मतलब पूछा तो ईसा अल-मसीह ने उसे एक तमसील सुनाई जिसमें एक सामरी एक ज़ख़्मी यहूदी की मदद करता है। यह सामरी अपना पैसा और वक़्त लगाकर बेचारे की मदद करता है। तमसील के मुताबिक़ हमें यों ही दीगर तमाम क़ौमों, क़बीलों और ज़बानों से मुहब्बत करनी है। न सिर्फ़ यह बल्कि हमें फ़रमाया गया है कि अपने दुश्मनों से भी मुहब्बत रखें।

सुस्ती

कुछ लोगों की फ़ितरत ऐसी है कि वह काम नहीं करना चाहते। यों वह दूसरों के लिए हमेशा बोझ का बाइस बनते हैं। इसमें कोई शक नहीं कि माज़ूरों की मदद करना हमारा फ़र्ज़ बनता है। लेकिन जो भी काम करने के क़ाबिल हो उसे इंजील के मुताबिक़ काम करना चाहिए। इंजीले-मुक़द्दस,1 थिस्सलुनीकियों 4:11-12,

> अपनी इज़्ज़त इसमें बरक़रार रखें कि आप सुकून से ज़िंदगी गुज़ारें, अपने फ़रायज़ अदा करें और अपने हाथों से काम करें, जिस तरह हमने आपको कह दिया था। जब आप ऐसा करेंगे तो ग़ैरईमानदार आपकी क़दर करेंगे और आप किसी भी चीज़ के मुहताज नहीं रहेंगे।

क़र्ज़

ऐसा क़र्ज़ न लें जो आप बाद में अदा नहीं कर सकते। ऐसी सूरत में आप क़र्ज़ देनेवाले के ग़ुलाम बन जाएँगे। इंजीले-मुक़द्दस, रोमियों 13:8,

> किसी के भी क़र्ज़दार न रहें। सिर्फ़ एक क़र्ज़ है जो आप कभी नहीं उतार सकते, एक दूसरे से मुहब्बत रखने का क़र्ज़। यह करते रहें क्योंकि जो दूसरों से मुहब्बत रखता है उसने शरीअत के तमाम तक़ाज़े पूरे किए हैं।

किसी के क़र्ज़दार न बनें और दूसरों से उधार न लें। बेशक एक दूसरे से मुहब्बत करना हम सबका फ़र्ज़ है। तौरेत, अमसाल 22:7 में हज़रत सुलेमान फ़रमाते हैं,

> अमीर ग़रीब पर हुकूमत करता, और क़र्ज़दार क़र्ज़ख़ाह का ग़ुलाम होता है।

कलाम फ़रमाता है कि किसी से क़र्ज़ या उधार लेने से हम उनके ग़ुलाम बन जाते हैं।

12

अगर अहकाम पर पूरे न उतरे तो फिर?

जब हम ईमान के दर्जे-बाला फ़रायज़ पर ग़ौर करते हैं तो सवाल उभर आता है कि क्या हम यह तमाम अहकाम पूरे कर सकते हैं? और अगर हम इन पर पूरे न उतरें तो फिर क्या होगा? क्या अल्लाह हमें रद करेगा? क्या नजात का यक़ीन जाता रहेगा? ज़ाहिरी बात है कि ईमानदार से भी गुनाह सरज़द होते हैं। ईमान लाने पर गो रूहुल-क़ुद्स हमें तक़वियत देता है तो भी हम कमज़ोर इनसान रहते हैं।

पहले दरकार है कि हम अल्लाह के अहकाम और उसके अल-मसीह में फ़ज़ल का मक़सद समझें। अल-मसीह ने हमारी जगह शरीअत की तकमील की। जिस पर हम पूरे न उतर सके उस पर वह पूरे उतरे। और न सिर्फ़ यह बल्कि हमारी ख़ातिर अपनी जान देने से उन्होंने हमारे गुनाहों

को मिटा डाला। अब से जो उन पर ईमान लाया वह रूहुल-क़ुद्स की मदद से सिराते-मुस्तक़ीम पर चल पड़ा है। इंजीले-मुक़द्दस, 2 तीमुथियुस 1:14,

> जो बेशक़ीमत चीज़ आपके हवाले कर दी गई है उसे रूहुल-क़ुद्स की मदद से जो हममें सुकूनत करता है महफ़ूज़ रखें।

रूहुल-क़ुद्स ईमानदार को इस राह पर चलने की तहरीक देता है, लिहाज़ा मुमकिन नहीं कि ईमानदार नेक आमाल न करे। इंजीले-मुक़द्दस, याक़ूब 2:26,

> जिस तरह बदन रूह के बग़ैर मुरदा है उसी तरह ईमान भी नेक आमाल के बग़ैर मुरदा है।

लेकिन हमारे नेक आमाल और सवाब हमें इलाही ग़ज़ब से नहीं बचाते। अल-मसीह के पहाड़ी वाज़ का एक ख़ास मक़सद यही कुछ दिखाना था। इंजीले-मुक़द्दस, मत्ती 5:20,

> क्योंकि मैं तुमको बताता हूँ कि अगर तुम्हारी रास्तबाज़ी शरीअत के उलमा और फ़रीसियों की रास्तबाज़ी से ज़्यादा नहीं तो तुम आसमान की बादशाही में दाख़िल होने के लायक़ नहीं।

हमें सिर्फ़ और सिर्फ़ ईसा अल-मसीह से नजात मिलती है। इंजीले-मुक़द्दस, तितुस 3:5,

> उसने हमें बचाया। यह नहीं कि हमने रास्त काम करने के बाइस नजात हासिल की बल्कि उसके रहम ही ने हमें रूहुल-क़ुद्स के वसीले से बचाया जिसने हमें धोकर नए सिरे से जन्म दिया और नई ज़िंदगी अता की।

ग़रज़, ईमान लाने पर भी हमारे नेक आमाल नाकाफ़ी हैं बल्कि हमें सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह के उस फ़ज़्ल से नजात मिलती है, जो उसने अल-मसीह के वसीले से करवाई। इंजीले-मुक़द्दस, इफ़िसियों 2:8-9,

> क्योंकि यह उसका फ़ज़्ल ही है कि आपको ईमान लाने पर नजात मिली है। यह आपकी तरफ़ से नहीं है बल्कि अल्लाह की बख़्शिश है। और यह नजात हमें अपने किसी काम के नतीजे में नहीं मिली, इसलिए कोई अपने आप पर फ़ख़्र नहीं कर सकता।

तो फिर शरीअत का क्या मक़सद है? शरीअत का मरकज़ी मक़सद यह है कि वह हमारी तरबियत करे और हमें गुनाह का एहसास दिलाकर अल-मसीह के पास पहुँचाए। इंजीले-मुक़द्दस, गलतियों 3:24,

> यों शरीअत को हमारी तरबियत करने की ज़िम्मेदारी दी गई। उसे हमें मसीह तक पहुँचाना था ताकि हमें ईमान से रास्तबाज़ क़रार दिया जाए।

ईमान लाने पर अल्लाह हमारे दिलों को रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए तबदील करके नेक काम करने की तहरीक देता है। गो हम ईमान लाने पर भी कामिल नहीं हो सकते, लेकिन रूहुल-क़ुद्स हमें बार बार हमारे गुनाहों और शैतानी ताक़तों पर ग़ालिब आने की क़ुव्वत अता करता है।

सो हम फ़तहमंद ज़िंदगी किस तरह गुज़ार सकते हैं? इसी में कि हम अपने आक़ा के साथ लिपटे रहें और रूहुल-क़ुद्स को दिल में जगह दें। तब पौलुस रसूल का दर्जे-ज़ैल क़ौल हम पर भी सादिक़ आएगा। इंजीले-मुक़द्दस, 2 तीमुथियुस 2:11-13,

> अगर हम उसके साथ मर गए
> तो हम उसके साथ जिएँगे भी।
> अगर हम बरदाश्त करते रहें
> तो हम उसके साथ हुकूमत भी करेंगे।
> अगर हम उसे जानने से इनकार करें
> तो वह भी हमें जानने से इनकार करेगा।
> अगर हम बेवफ़ा निकलें
> तो भी वह वफ़ादार रहेगा।
> क्योंकि वह अपना इनकार नहीं कर सकता।

13

ईसा अल-मसीह में क़ायम रहना

हर लमहा ईसा अल-मसीह में क़ायम रहें। क्योंकि उसके बग़ैर हम कामयाब नहीं हो सकते। इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 15:4-5,

> मुझमें क़ायम रहो तो मैं भी तुममें क़ायम रहूँगा। जो शाख़ बेल से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिलकुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझमें क़ायम नहीं रहते फल नहीं ला सकते। मैं ही अंगूर की बेल हूँ, और तुम उसकी शाख़ें हो। जो मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें वह बहुत-सा फल लाता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते।

जिस तरह शाख़ दरख़्त से अलग होकर ज़िंदा नहीं रह सकती उसी तरह ईमानदार ईसा अल-मसीह से अलग क़ायम नहीं रह सकता। जिस तरह शाख़ दरख़्त के साथ पैवस्त होने के बाइस ज़िंदा रहती है उसी तरह ईमानदार भी लमहा बलमहा ईसा अल-मसीह के साथ पैवस्त रहने से ही क़ायम रहता है। ईसा अल-मसीह के बग़ैर ईमानदार फल लाकर अपनी ज़िंदगी से अल्लाह को जलाल नहीं दे सकता।

14

सताते वक़्त साबितक़दम रहना

ईमान लाने पर बहुत दफ़ा तकलीफ़ का सामना करना पड़ता है। मुमकिन है कि नए ईमानदार से बदसुलूकी की जाए, उसे जेल में डाला जाए, यहाँ तक कि उसे क़त्ल भी किया जाए। गो ऐसा करने से लोग अल्लाह की ख़िलाफ़वरज़ी करते हैं ताहम ईसा अल-मसीह के किसी भी पैरोकार के साथ ऐसा सुलूक बहुत मुमकिन है। इंजीले-मुक़द्दस, 2 तीमुथियुस 3:12,

> बात यह है कि सब जो मसीह ईसा में ख़ुदातरस ज़िंदगी गुज़ारना चाहते हैं उन्हें सताया जाएगा।

इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 15:18-19; 16:1-4,33 में ईसा अल-मसीह फ़रमाते हैं,

अगर दुनिया तुमसे दुश्मनी रखे तो यह बात ज़हन में रखो कि उसने तुमसे पहले मुझसे दुश्मनी रखी है। अगर तुम दुनिया के होते तो दुनिया तुमको अपना समझकर प्यार करती। लेकिन तुम दुनिया के नहीं हो। मैंने तुमको दुनिया से अलग करके चुन लिया है। इसलिए दुनिया तुमसे दुश्मनी रखती है।

मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ। वह तुमको यहूदी जमातों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक़्त भी आनेवाला है कि जो भी तुमको मार डालेगा वह समझेगा, 'मैंने अल्लाह की ख़िदमत की है।' वह इस क़िस्म की हरकतें इसलिए करेंगे कि उन्होंने न बाप को जाना है, न मुझे। मैंने तुमको यह बातें इसलिए बताई हैं कि जब उनका वक़्त आ जाए तो तुमको याद आए कि मैंने तुम्हें आगाह कर दिया था।

मैंने तुमको इसलिए यह बात बताई ताकि तुम मुझमें सलामती पाओ। दुनिया में तुम मुसीबत में फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनिया पर ग़ालिब आया हूँ।

इंजीले-मुक़द्दस, आमाल 4:24,29-31,

> यह सुनकर तमाम ईमानदारों ने मिलकर ऊँची आवाज़ से दुआ की, “ऐ आक़ा, तूने आसमानो-ज़मीन और समुंदर को और जो कुछ उनमें है ख़लक़ किया है . . . ऐ रब, अब उनकी धमकियों पर ग़ौर कर। अपने ख़ादिमों को अपना कलाम सुनाने की बड़ी दिलेरी अता फ़रमा। अपनी क़ुदरत का इज़हार कर ताकि हम तेरे मुक़द्दस ख़ादिम ईसा के नाम से शफ़ा, इलाही निशान और मोजिज़े दिखा सकें।” दुआ के इख़्तिताम पर वह जगह हिल गई जहाँ वह जमा थे। सब रूहुल-क़ुद्स से मामूर हो गए और दिलेरी से अल्लाह का कलाम सुनाने लगे।

सताते वक़्त अल्लाह से दुआ करें कि मुझे हौसला, दिलेरी और ताक़त अता कर ताकि मैं डरे बग़ैर तेरा कलाम सुना दूँ। बीमारों के लिए दुआ करें तो ईसा अल-मसीह के नाम से मोजिज़े पेश आएँगे, उनके नाम को जलाल मिलेगा। तब बहुत-सारे लोगों को समझ आएगी कि वह दुनिया के नजातदहिंदा हैं जिनकी क़ुरबानी के वसीले से हमारे गुनाह मिट गए हैं।

15

अपनी ज़िंदगी से ईमान की गवाही

हर ईमानदार को अपने क़रीबी रिश्तेदारों, पड़ोसियों और दोस्तों से शुरू होकर अपने ईमान की गवाही देनी है। इंजीले-मुक़द्दस, 1 पतरस 3:1-2; 2:12,15,

> इसी तरह आप बीवियों को भी अपने अपने शौहर के ताबे रहना है। क्योंकि इस तरह वह जो ईमान नहीं रखते अपनी बीवी के चाल-चलन से जीते जा सकते हैं। कुछ कहने की ज़रूरत नहीं रहेगी क्योंकि वह देखेंगे कि आप कितनी पाकीज़गी से ख़ुदा के ख़ौफ़ में ज़िंदगी गुज़ारती हैं। इसकी फ़िकर मत करना कि आप ज़ाहिरी तौर पर आरास्ता हों, मसलन ख़ास तौर-तरीक़ों से गुँधे

हुए बालों से या सोने के ज़ेवर और शानदार लिबास पहनने से।

ग़ैरईमानदारों के दरमियान रहते हुए इतनी अच्छी ज़िंदगी गुज़ारें कि गो वह आप पर ग़लत काम करने की तोहमत भी लगाएँ तो भी उन्हें आपके नेक काम नज़र आएँ और उन्हें अल्लाह की आमद के दिन उसकी तमजीद करनी पड़े। क्योंकि अल्लाह की मरज़ी है कि आप अच्छा काम करने से नासमझ लोगों की जाहिल बातों को बंद करें।

16

ख़ानदानी ज़िंदगी

इंजीले-मुक़द्दस, इफ़िसियों 5:33; 6:1,

> लेकिन इसका इतलाक़ आप पर भी है। हर शौहर अपनी बीवी से इस तरह मुहब्बत रखे जिस तरह वह अपने आपसे रखता है। और हर बीवी अपने शौहर की इज़्ज़त करे। बच्चो, ख़ुदावंद में अपने माँ-बाप के ताबे रहें, क्योंकि यही रास्तबाज़ी का तक़ाज़ा है।

लाज़िम है कि मुहब्बत और इज़्ज़त ख़ानदान की बुनियाद हो। तब ही अल्लाह की सलामती ख़ानदान में क़ायम रहेगी।

क्या ग़ैरईमानदार से शादी करने की इजाज़त है?

क्या ईसा अल-मसीह पर ईमान रखनेवाले मर्द को उस औरत से शादी करने की इजाज़त है जो ईसा अल-मसीह की पैरोकार न हो? क्या ईमानदार औरत को ग़ैरईमानदार आदमी से शादी करने की इजाज़त है? इंजीले-मुक़द्दस, 2 कुरिंथियों 6:14-16,

> ग़ैरईमानदारों के साथ मिलकर एक जुए तले ज़िंदगी न गुज़ारें, क्योंकि रास्ती का नारास्ती से क्या वास्ता है? या रौशनी तारीकी के साथ क्या ताल्लुक़ रख सकती है? मसीह और इबलीस के दरमियान क्या मुताबिक़त हो सकती है? ईमानदार का ग़ैरईमानदार के साथ क्या वास्ता है? अल्लाह के मक़दिस और बुतों में क्या इत्तफ़ाक़ हो सकता है? हम तो ज़िंदा ख़ुदा का घर हैं। अल्लाह ने यों फ़रमाया है, "मैं उनके दरमियान सुकूनत करूँगा और उनमें फिरूँगा। मैं उनका ख़ुदा हूँगा, और वह मेरी क़ौम होंगे।"

ईमानदार और ग़ैरईमानदार को एक नहीं होना चाहिए, क्योंकि उनके दरमियान मुताबिक़त नहीं होती। क्या हम रौशनी और तारीकी को एक बना सकते हैं? हरगिज़ नहीं! जिस तरह अल्लाह और इबलीस एक दूसरे के मुतज़ाद हैं उसी तरह ईमानदार और ग़ैरईमानदार रूहानी तौर पर एक दूसरे के मुतज़ाद हैं।

17

नजात और जन्नत का यक़ीन

इंजीले-शरीफ़ तसदीक़ करती है कि जो ईसा अल-मसीह पर ईमान लाया उसे जन्नत नसीब हुई है। इसकी तसदीक़ अल्लाह ख़ुद से हुई है, क्योंकि ईसा अल-मसीह ने हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए अपनी जान दे दी। इंजीले-मुक़द्दस, 1 यूहन्ना 5:11-13,

> और गवाही यह है, अल्लाह ने हमें अबदी ज़िंदगी अता की है, और यह ज़िंदगी उसके फ़रज़ंद में है। जिसके पास फ़रज़ंद है उसके पास ज़िंदगी है, और जिसके पास फ़रज़ंद नहीं है उसके पास ज़िंदगी भी नहीं है। मैं आपको जो अल्लाह के फ़रज़ंद के नाम पर ईमान रखते

> हैं इसलिए लिख रहा हूँ कि आप जान लें कि आपको अबदी ज़िंदगी हासिल है।

अल्लाह तआला का फ़रमान है कि जो ईसा अल-मसीह पर ईमान लाए वह जन्नत में पहुँचेगा, लेकिन जो इनकार करे कि ईसा अल-मसीह मेरे आक़ा और नजातदहिंदा हैं वह जहन्नुम में जाएगा। जो ईसा अल-मसीह पर ईमान रखें उन्हें सौ फ़ीसद यक़ीन है कि जन्नत में मेरे लिए जगह मुक़र्रर की गई है। इसमें शक की गुंजाइश ही नहीं। इंजीले-मुक़द्दस, यूहन्ना 3:16,36,

> क्योंकि अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए।
>
> चुनाँचे जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान लाता है अबदी ज़िंदगी उसकी है। लेकिन जो फ़रज़ंद को रद करे वह इस ज़िंदगी को नहीं देखेगा बल्कि अल्लाह का ग़ज़ब उस पर ठहरा रहेगा।

इसका मतलब यह है कि अल्लाह ने ईसा अल-मसीह को दुनिया में इसलिए भेजा कि जो भी उस पर ईमान लाया वह मौत के बाद उसके हुज़ूर होगा। इसके बरअक्स जो उस पर ईमान न लाया वह वहाँ नहीं पहुँचेगा बल्कि अल्लाह का ग़ज़ब उस पर नाज़िल होगा।

18

सबको ख़ुशख़बरी सुनाना

इंजील के मुताबिक़ पूरी दुनिया में ख़ुशख़बरी फैलाना ईमानदारों का अज़ीम फ़र्ज़ है। इसमें सब शामिल हैं। यह अलग बात है कि सुननेवाले यह ख़ुशख़बरी क़बूल या रद करें, लेकिन अहम बात यह है कि हर एक को यह पैग़ाम सुनने का मौक़ा मिल जाए ताकि वह ख़ुद फ़ैसला कर सके। इंजीले-मुक़द्दस, मरक़ुस 16:15-16,20,

> फिर उसने उनसे कहा, “पूरी दुनिया में जाकर तमाम मख़लूक़ात को अल्लाह की ख़ुशख़बरी सुनाओ। जो भी ईमान लाकर बपतिस्मा ले उसे नजात मिलेगी। लेकिन जो ईमान न लाए उसे मुजरिम क़रार दिया जाएगा।”

> ... इस पर शागिर्दों ने निकलकर हर जगह मुनादी की। और ख़ुदावंद ने उनकी हिमायत करके इलाही निशानों से कलाम की तसदीक़ की।

इंजीले-मुक़द्दस, लूक़ा 24:45-48,

> फिर उसने उनके ज़हन को खोल दिया ताकि वह अल्लाह का कलाम समझ सकें। उसने उनसे कहा, "कलामे-मुक़द्दस में यों लिखा है, मसीह दुख उठाकर तीसरे दिन मुरदों में से जी उठेगा। फिर यरूशलम से शुरू करके उसके नाम में यह पैग़ाम तमाम क़ौमों को सुनाया जाएगा कि वह तौबा करके गुनाहों की माफ़ी पाएँ। तुम इन बातों के गवाह हो।

हर ईमानदार ईसा अल-मसीह का गवाह है। लाज़िम है कि वह अपने ख़ानदान और दोस्तों से शुरू करके अपना ईमान दूसरों को पेश करे। कुछ दूसरे शहरों में बल्कि दूसरे ममालिक में जाकर ईसा अल-मसीह की ख़ुशख़बरी सुनाएँगे। हमारे आक़ा हमेशा हमारे साथ रहेंगे। वह अपने कलाम की तसदीक़ करके हमारे ज़रीए इलाही निशान दिखाएँगे। और यह सब कुछ अल्लाह को जलाल देगा। उसकी मरज़ी है कि दुनिया की तमाम क़ौमों और क़बीलों में से अफ़राद ईसा अल-मसीह की तमजीद करके इक़रार करें कि अल-मसीह (सलामुहु अलैना) हमारे आक़ा और नजातदहिंदा हैं।

19

यौमे-आख़िरत, जन्नत और जहन्नुम

इंजीले-मुक़द्दस, मुकाशफ़ा 21:5-8,

> जो तख़्त पर बैठा था उसने कहा, “मैं सब कुछ नए सिरे से बना रहा हूँ।” उसने यह भी कहा, “यह लिख दे, क्योंकि यह अलफ़ाज़ क़ाबिले-एतमाद और सच्चे हैं।” फिर उसने कहा, “काम मुकम्मल हो गया है! मैं अलिफ़ और ये, अव्वल और आख़िर हूँ। जो प्यासा है उसे मैं ज़िंदगी के चश्मे से मुफ़्त पानी पिलाऊँगा। जो ग़ालिब आएगा वह यह सब कुछ विरासत में पाएगा। मैं उसका ख़ुदा हूँगा और वह मेरा फ़रज़ंद होगा। लेकिन बुज़दिलों, ग़ैरईमानदारों, घिनौनों, क़ातिलों, ज़िनाकारों,

> जादूगरों, बुतपरस्तों और तमाम झूठे लोगों का अंजाम जलती हुई गंधक की शोलाख़ेज़ झील है। यह दूसरी मौत है।”

इंजीले-मुक़द्दस, मुकाशफ़ा 22:20-21,

> जो इन बातों की गवाही देता है वह फ़रमाता है, “जी हाँ! मैं जल्द ही आने को हूँ।” “आमीन! ऐ ख़ुदावंद ईसा आ!” ख़ुदावंद ईसा का फ़ज़ल सबके साथ रहे।

अल्लाह की मरज़ी से ईसा अल-मसीह (सलामुहु अलैना) हमारे नजातदहिंदा बन गए। वह वाहिद शख़्स हैं जिनसे कोई भी गुनाह सरज़द न हुआ। इसी लिए वह दुनिया की ख़ातिर क़ुरबान होने के लायक़ थे। वह आपकी ख़ातिर भी क़ुरबान हुए, लेकिन लाज़िम है कि आप यह क़ुरबानी क़बूल करके उन पर ईमान लाएँ और पूरे दिल से उनसे चिमटे रहें। तब आप दुआ के ज़रीए उनके साथ राबता क़ायम रख सकते हैं।

चूँकि हम दुआ के ज़रीए अल्लाह के साथ रिफ़ाक़त रखते हैं इसलिए हम अपनी अपनी मादरी ज़बान में दुआ कर सकते हैं। अगर आप इक़रार करना चाहें कि ईसा अल-मसीह मेरे नजातदहिंदा और आक़ा हैं तो आप इंजीले-मुक़द्दस, 1 तीमुथियुस 2:5 के अलफ़ाज़ के मुताबिक़ दर्जे-ज़ैल दुआ माँग सकते हैं।

मैं इक़रार करता हूँ कि एक ही अल्लाह है और कि ख़ुदा और इनसान के बीच में एक ही दरमियानी है यानी ईसा अल-मसीह जिसने अपनी जान देने से मुझे मेरे गुनाहों से नजात दी।

आप दर्जे-ज़ैल दुआ भी माँग सकते हैं :

ऐ मेरे ख़ुदावंद ईसा अल-मसीह, मुझे तेरी ज़रूरत है, क्योंकि मैं गुनाहगार हूँ और तू ही मुझे पाक-साफ़ कर सकता है। अब आकर मेरी ज़िंदगी का आक़ा और मालिक बन जा। आज से लेकर अबद तक मैं तेरी पैरवी करूँगा। मुझे यक़ीन है कि मुझे तेरी तरफ़ से नजात हासिल हुई है, क्योंकि तू मेरी ख़ातिर अपनी जान देकर मेरी पूरी ज़िंदगी का ख़ुदावंद है। आमीन।

20

कलाम का मुतालआ करने का मुफ़ीद तरीक़ा

ज़ैल में एक सादा-सा तरीक़ा है जिससे आप दूसरों से मिलकर अल्लाह के कलाम का मुतालआ कर सकते हैं। जमात का राहनुमा सवाल पेश करे और बाक़ी लोग इनके जवाब दें।

शुक्रगुज़ारी

हर एक दर्जे-ज़ैल सवालों का जवाब देने में हिस्सा ले।

- गुज़रे हफ़्ते में क्या क्या पेश आया जो शुक्र का बाइस है?
- क्या आप अल्लाह के फ़रमान पर अमल कर सके?
- क्या आप किसी को ख़ुशख़बरी सुना सके?

- क्या आपको किसी दुआ का जवाब मिल गया?
- क्या आपको रूहानी या माली तरक़्क़ी का तजरिबा हुआ?

ज़रूरियात

- आपकी क्या क्या ज़रूरियात हैं? या आपके अज़ीज़ो-अक़ारिब में क्या ज़रूरियात हैं?

  ज़रूरियात में बहुत कुछ शामिल हो सकता है, मसलन कोई बीमारी या दुख। यह ज़रूरत रूहानी भी हो सकती है। हर एक अपने ख़याल का इज़हार करे, फिर सब मिलकर दुआ करें कि अल्लाह यह ज़रूरियात पूरी करे।
- क्या यह ज़रूरियात हमसे पूरी हो सकती हैं?

  सब बातचीत करें कि क्या हमें कुछ करने की ज़रूरत है या नहीं। अल्लाह से दुआ करें कि वह सही मदद करने में आपकी राहनुमाई करे।

मुतालआ

सब मिलकर अल्लाह के कलाम का कोई हवाला पाँच दफ़ा पढ़ें। अगर कोई अनपढ़ हो तो वह सुने। हर एक अपने अलफ़ाज़ में हवाला दोहराकर सोचे कि अल्लाह क्या फ़रमाना चाहता है?

सब दर्जे-ज़ैल हाथ के मुताबिक़ जवाब दें।

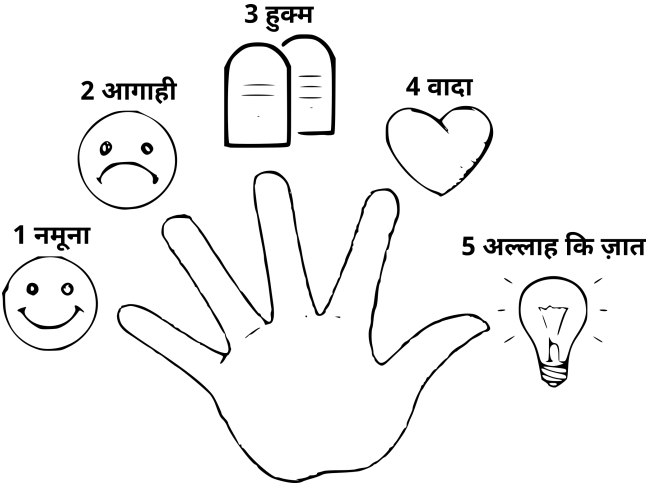

हाथ के सवालात

1. **नमूना :** इस हवाले में जिन लोगों का ज़िक्र हुआ है, क्या वह अच्छा या बुरा नमूना पेश करते हैं?
2. **आगाही :** क्या किसी गुनाह या आज़माइश से आगाह किया गया है?
3. **हुक्म :** क्या यहाँ कोई हुक्म पेश किया गया है जिस पर अमल करना है?
4. **वादा :** क्या कोई वादा किया गया है जिसके साथ लिपट जाना है?
5. **अल्लाह की ज़ात :** क्या इस हवाले में बाप, ईसा अल-मसीह या रूहुल-क़ुद्स के बारे में कुछ सिखाया गया है?

बाँटना

फ़ैसला करें कि इस हफ़्ते के दौरान मैं यह बातें किस को बताऊँगा।

अगले हफ़्ते जब रिफ़ाक़त के लिए इकट्ठे हो जाएँ तो आगे पढ़ने से पहले ज़रूर पूछें कि क्या हुआ? क्या आपने गुज़श्ता हफ़्ते में कलाम पर अमल किया? क्या नतीजा निकला? क्या आपने गुज़रे हफ़्ते का सबक़ किसी को सुनाया? यह करने से क्या तजरिबा हुआ?

21

सेहतमंद जमात के निशान

कुछ लोग जमात की जगह चर्च या कलीसिया कहते हैं। बात एक ही है। जब ईमानदार अल-मसीह के नाम में जमा होते हैं तो वह जमात कहलाते हैं। चर्च की जगह जमात ज़्यादा मौज़ूँ है, क्योंकि इससे मुराद कोई मकान नहीं है बल्कि वह लोग जो अल-मसीह पर ईमान लाकर उसके ताबे हो गए हैं।

इंजीले-मुक़द्दस के मुताबिक़ सेहतमंद जमात के दर्जे-ज़ैल निशान होते हैं। ज़रूरी नहीं कि यह निशान सबके सब बराबर नज़र आएँ, क्योंकि हर जमात में तरक़्क़ीओ-तनज़्ज़ुली होती है। लेकिन मज़बूत जमात के लिए यह सबके सब ज़रूरी हैं।

तौबा

अल-मसीह की ख़ुशख़बरी सुनने के बाद लाज़िम है कि लोग अपने गुनाहों से तौबा करके उनसे दूर हो जाएँ।

पतरस की यह बातें सुनकर लोगों के दिल छिद गए। उन्होंने पतरस और बाक़ी रसूलों से पूछा, “भाइयो, फिर हम क्या करें?” (आमाल 2:37)

बपतिस्मा

बपतिस्मा करने से ईमानदार ज़ाहिर करता है कि वह गुनाह की हुकूमत से निकल गया है और अब उसकी मसीह में ज़िंदगी अल्लाह के लिए मख़सूस है।

पतरस ने जवाब दिया, “आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह माफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। (आमाल 2:38)

रूहुल-क़ुद्स

अल-मसीह हमें अपने रूह से नवाज़ते हैं ताकि हम उनकी ख़ातिर ज़िंदगी गुज़ार सकें। रूहुल-क़ुद्स के बिना हम ज़िंदगी उनकी ख़ातिर नहीं गुज़ार सकते।

पतरस ने जवाब दिया, "आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह माफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। (आमाल 2:38)

माफ़ी

अपनी जान देने से ईसा अल-मसीह हमारे दिलों को तमाम गुनाहों से पाक-साफ़ कर देते हैं।

पतरस ने जवाब दिया, "आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह माफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। (आमाल 2:38)

इज़ाफ़ा

बाक़ायदगी से जमात में लोगों का इज़ाफ़ा होता जाता है और शागिर्द शागिर्दों को बनाते रहते हैं। यों जमातों का इज़ाफ़ा भी होता रहता है।

पतरस ने जवाब दिया, "आप में से हर एक तौबा करके ईसा के नाम पर बपतिस्मा ले ताकि आपके गुनाह माफ़ कर दिए जाएँ। फिर आपको रूहुल-क़ुद्स की नेमत मिल जाएगी। (आमाल 2:41)

अल्लाह का कलाम

अल्लाह का कलाम हर काम में हमारी राहनुमाई करता है।

जिन्होंने पतरस की बात क़बूल की उनका बपतिस्मा हुआ। यों उस दिन जमात में तक़रीबन 3,000 अफ़राद का इज़ाफ़ा हुआ। (आमाल 2:42)

रिफ़ाक़त

दूसरे ईमानदारों के साथ रिफ़ाक़त रखने से हम रूहानी तरक़्क़ी करके अल-मसीह की मुअस्सर ख़िदमत करने के क़ाबिल हो जाते हैं।

यह ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे। (आमाल 2:42)

रिफ़ाक़ती खाना

अल-मसीह के नाम में रिफ़ाक़ती खाना खाने से हम एक हो जाते हैं और अल-मसीह में हमारी यगांगत बढ़ती जाती है।

यह ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे। (आमाल 2:42)

दुआ

ईमानदार की ज़िंदगी में दुआ मरकज़ी हैसियत रखती है, चाहे जमात में की जाए या तनहाई में।

यह ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे। (आमाल 2:42)

हर वक़्त ख़ुश रहें, बिलानाग़ा दुआ करें, और हर हालत में ख़ुदा का शुक्र करें। क्योंकि जब आप मसीह में हैं तो अल्लाह यही कुछ आपसे चाहता है। (1 थिस्सलुनीकियों 5:16-18)

मोजिज़े और निशान

अल-मसीह अपने शागिर्दों को मोजिज़ों और निशानों से नवाज़ते हैं जब वह उससे मिन्नत करते हैं। यों वह शफ़ा और दीगर मोजिज़ों से अपने पैरोकारों के वसीले से अपने आपको जलाल देता है।

यह ईमानदार रसूलों से तालीम पाने, रिफ़ाक़त रखने और रिफ़ाक़ती खानों और दुआओं में शरीक होते रहे। (आमाल 2:43)

दुख-सुख में शिरकत

अल-मसीह के पैरोकार एक दूसरे की फ़िकर करके माली तौर पर भी एक दूसरे की मदद करते थे।

सब पर ख़ौफ़ छा गया और रसूलों की तरफ़ से बहुत-से मोजिज़े और इलाही निशान दिखाए गए। (आमाल 2:45)

अल्लाह की हम्दो-सना

ईमानदार जमा होते वक़्त हमेशा अल्लाह और अल-मसीह की सताइश किया करते थे।

अपनी मिलकियत और माल फ़रोख़्त करके उन्होंने हर एक को उसकी ज़रूरत के मुताबिक़ दिया। (आमाल 2:46-47)

ख़ुलासा

आमाल 2:37-47 के मुताबिक़ सेहतमंद जमात के दर्जे-ज़ैल निशान होते हैं। हो सकता है कि जमात में तमाम निशान एक वक़्त न हों। लेकिन लाज़िम है कि जमात का राहनुमा अपनी जमात की जाँच-पड़ताल करता रहे ताकि मालूम हो जाए कि क्या यह निशान मौजूद हैं? अगर नहीं तो वह अल-मसीह से मिन्नतो-समाजत करे कि वह हिकमत अता फ़रमाए ताकि यह तमाम निशान जमात में क़ायम हो जाएँ।

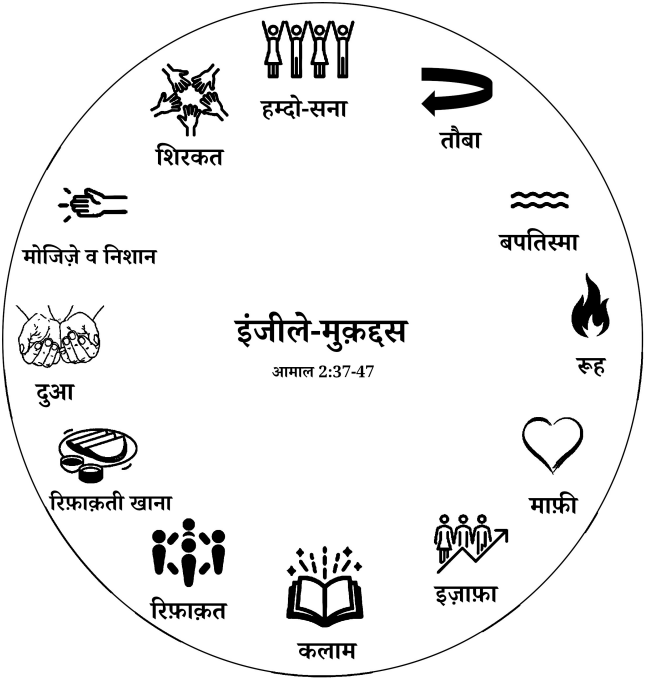
हम्दो-सना
तौबा
बपतिस्मा
रूह
माफ़ी
इज़ाफ़ा
कलाम
रिफ़ाक़त
रिफ़ाक़ती खाना
दुआ
मोजिज़े व निशान
शिरकत
इंजीले-मुक़द्दस
आमाल 2:37-47